ISSN 2277-7660

पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक अनूठी पारिवारिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं आध्यात्मिक मासिक पत्रिका

अमर ज्योति

फाल्गुन मेले की हार्दिक शुभकामनाएं

वर्ष: 67 अंक: 3 मार्च 2016

प्रकाशक :
बिश्नोई सभा, हिसार

संपादक :
डॉ. सुरेन्द्र कुमार बिश्नोई

व्यवस्थापक:
प्रमोद कुमार ऐचरा

कार्यालय पता :
'अमर ज्योति'
श्री बिश्नोई मन्दिर
हिसार - 125 001 (हरियाणा)
फोन : 8059027929
email: editor@amarjyotipatrika.com,
info@amarjyotipatrika.com
Website : www.amarjyotipatrika.com

सभा कार्यालय :
फोन : 01662-225804

इस पत्रिका में उल्लेखित व्यवस्थापक के अतिरिक्त सभी पद अवैतनिक एवं निष्काम सेवार्थ है।

सदस्यता शुल्क :
वार्षिक सदस्यता : ₹ 70
आजीवन सदस्यता : ₹ 700

"अमर ज्योति में प्रकाशित लेख एवं विचार लेखकों के वैयक्तिक हैं। संपादक का इनसे सहमत या असहमत होना आवश्यक नहीं है। लेख संबंधी आपत्तियों हेतु सीधे लेखक से सम्पर्क करें"

'अमर ज्योति' का ज्ञान दीप अपने घर आँगन में जलाइये।

विषय अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
सबदवाणी	3
सम्पादकीय	5
हीरानन्दजी कृत हिंडोलणो	6
छंद रेणकी	7
भगवत्तत्त्व मीमांसा और गुरु जाम्भोजी	8
जांभाणी रचनाकार संत श्रीपरमानन्दजी बणियाल	12
कविताएँ- गँवार सभा, शराब कितनी खराब, सूचना	17
जाम्भाणी परम्परा में नारी का स्थान, महत्व और योगदान	18
बधाई सन्देश	19
जाम्भाणी हरजस- उधोजी कृत राग गवड़ी, राग काफी	20
लोक साहित्य- गुगरी, पोमचो लोकगीत	21
पर्यावरणं रक्षन्तु- वैदिक चिन्तन में पर्यावरण	22
स्वस्थ रहो- आरोग्यता बढ़ाने में सहायक 'स्नान'	23
कैरियर- कैसे करें साक्षात्कार तैयारी	25
बाल कविताएँ- अगर पेड़ भी चलते, एक बीज, सूरज भाई	26
जाम्भाणी प्रश्नमाला-3	27
विविधा- वन्य जीव और मनुष्य, अपील	28
बिश्नोई परम्परा में जागरण और मेले	29
युवा और समाज	30
सामाजिक हलचल	31-38

सभी विवादों का न्यायक्षेत्र हिसार न्यायालय होगा।

सबद 51

"दोहा"

जोगी शब्द मांनै नहीं, सतगुरु कही विचार।
देवजी न्हयालै साध न, हुकम कियो तिण बार।
न्हयालै ने सतगुरु कह्यो, आयसां ने समझावों।
बैठो आसन अधर कर, लखमण सो जसवावों।
मारग में पतियो लियो, आसण टिक्यो न कोय।
तब जाण्यो नहीं जीतस्यूं, पूठो आयो सोय।
मैं प्रभु जाऊं नहीं, सिद्धि मोपे नांहि।
मारग में पतियो लियो, गिर पड़ियो भूंय मांहि।
पूठ थापली जम्भगुरु, रहो जु मन में सेंठो।
तब जन न्हयालै जाय कै, अधर सूं आसण बैठो।
अवनी सूं इकीस गज, बैठो दीखे सोय।
इह सिद्ध म्हां सुं अधिक है, देख डरे सब कोय।
बैठ वचन ऐसो कह्यो, लखमण सूं सवायो।
कै आसण मोपै करो, कै पूठा उठ ज्यावो।
जोगी हारे उठ चले, कहे आदेश आदेश।
जम्भेश्वर पूरा गुरु, मन आयो उपदेश।

सतगुरु ने बहुत ही विचारपूर्ण बात कही परन्तु नाथ योगी ने स्वीकार नहीं किया। तब देवजी ने उस योगी को तो अपने पास में बैठा लिया और निहालदास साधु को अपनी सिद्धि देकर लक्ष्मण के पास भेजा और कहा कि इन आयसों को समझा करके मेरे पास ले आओ। निहालदास ने चलते चलते ही सिद्धि की परीक्षा करनी चाही कि मेरा आसन धरती के उपर उठता है कि नहीं यह देखना चाहिये। नहीं तो आगे जाकर कहीं बदनामी तो न हो जाये। ज्योंहि आसन उछाल करके आसन उपर उठाने की कोशिश की त्योंहि धरती पर गिर पड़ा। निहालदास वहीं से वापिस लौट आया और कहने लगा–

हे सतगुरु मैं तो नहीं जा सकता क्योंकि सिद्धि मेरे पास में नहीं है। यह मार्ग में मैंने देखा है। तब जम्भगुरु ने पीठ पर थापी लगायी और कहा–अब तुम फिर वापिस जाओ किन्तु मार्ग में परीक्षा नहीं करना। लक्ष्मण नाथ के डेरे में पहुंच कर निहालदास ने धरती से इक्कीस गज ऊंचा आसन लगाकर सिद्धि बल से स्थिर हो गया। तब योगी लोग देखकर डर गये और कहने लगे– यह सिद्ध तो हमारे से ज्यादा हैं। निहालदास ने उनसे कहा– या तो तुम मेरे से उपर आसन करके दिखाओ या हार मानकर जम्भ देवजी के पास चलो। तब लक्ष्मण नाथ सहित सभी लोग आदेश आदेश कहते हुए वहां से सम्भराथल चल पड़े।

इस प्रकार से सम्भराथल पर पहुंचकर जाम्भोजी को चारों तरफ से घेरकर बैठ गए और कहने लगे कि हमने सुना है कि जाम्भोजी निराहारी हैं। किन्तु हम इस बात को कदापि स्वीकार नहीं कर सकते। या तो स्वयं कहीं भोजन कर आते हैं या कोई रात्रि में भोजन दे जाता है इसी परीक्षा के लिए तीन दिन रात–दिन जाम्भोजी को घेर कर बैठे रहे। तीसरे दिन सूर्यदेव की किरणें अति तीक्ष्ण हो गयीं जिससे योगी लोगों को करारी ताप लगी। कई तो इधर–उधर छाया ताकने लगे और कई भूख के मारे बेहाल होकर गांवों में भिक्षा के लिये चले गए, किन्तु जम्भदेवजी वहीं पर ही स्थिर रहे।

उन सभी को विपत्ति में पड़े हुए देखकर श्री देवजी ने उनके लिए भिक्षा भोजन की व्यवस्था करवायी। सभी को भोजन परोसा गया तब लक्ष्मणनाथ कहने लगा– आप भी आइए भोजन कीजिये क्योंकि बड़े–बड़े अवतार हुए हैं उन्होंने सभी ने भोजन किया है। यदि आप भोजन नहीं करोगे तो हम भी नहीं कर सकते। तब जम्भेश्वर जी ने कहा– कि तुम लोग विवाद मत करो। इसमें भी फिर तुम्हारी ही हार होगी। मुझे भूख होती तो अवश्य ही भोजन करता। आप लोग भूख से व्याकुल हैं इसलिए भोजन कीजिए। ऐसा कहते हुए सबद सुनाया–

सबद–51

ओ३म् सप्त पताले भुंय अंतर अंतर राखिलो, म्हे अटला अटलूं।

अलाह अलेख अडाल अजूनी शिंभू, पवन अधारी पिंड जलूं।

भावार्थ– इस शरीर के अन्दर ही सप्त पाताल हैं जिसे योग की भाषा में मूलाधार चक्र जो गुदा के पास है इनसे

प्रारम्भ होकर इससे उपर उठने पर नाभि के पास स्वाधिष्ठान चक्र है, इससे आगे हृदय के पास मणिपूर चक्र, कण्ठ के पास अनाहत चक्र, भूमण्डल में विशुद्ध चक्र तथा उससे उपर आज्ञा चक्र है। इन छः पाताल यानि नीचे के चक्रों को भेदन करता हुआ सातवें सहस्रार ब्रह्मरंध्र में प्राण स्थित हो जाते हैं तब योगी की समाधी लग जाती है। जम्भदेवजी कहते हैं कि मैंने तो अपने प्राणों को इन सात चक्रों के अन्दर ही रख लिया है।

प्राणों का धर्म है भूख-प्यास लगना। वे प्राण तो समाधिस्थ होकर सहस्रार-ब्रह्मरंध्र से झरते हुए अमृत का पान करते हैं। फिर मुझे आवश्यकता अन्न की नहीं है। इसलिए मैं स्थिर होकर यहां बैठा हुआ हूँ। यह पृथ्वी जल का बना हुआ शरीर अवश्यमेव जल और अन्न की मांग करेगा। किन्तु प्राणों को जीत करके समाधी में स्थित हो जाने पर तो फिर शरीर से उपर उठकर यह आत्मा अपने शुद्ध स्वरूप को जो अलाह, अडाल, अयोनी, स्वयंभू के रूप में ही स्थित हो जाती है। यही आत्मा का शुद्ध स्वरूप है।

काया भीतर माया आछै, माया भीतर दया आछै।
दया भीतर छाया जिहिं कै, छाया भीतर बिंब फलूं।

क्योंकि इस पंच भौतिक शरीर के भीतर ही माया है अर्थात् माया प्रकृति शरीर के कण कण में समायी हुई है क्योंकि माया से ही यह शरीर निर्मित है। उसी शरीर रूपी माया के अन्दर हृदय है। वही इसी शरीर के अन्दर ही है। उसी हृदय में भी माया की छाया में ढ़का हुआ वह परमपिता परमात्मा का प्रतिबिम्ब रूप आत्मा स्थित है वही फल रूप है। उसी फल की प्राप्ति के लिये प्रथम तो ज्ञान द्वारा माया का छेदन होगा तो उसकी छाया भी निवृत्त हो जायेगी फिर आत्म साक्षात्कार होगा।

पूरक पूर पूर ले पोंण, भूख नहीं अन्न जीमत कोंण।

यही आत्म साक्षात्कार और माया का भेदन मैंने प्राणायाम द्वारा किया है। पूरक, रेचक, कुम्भक इन्हीं विधि से प्राणों को अधीन किया है। अब मुझे भूख ही नहीं लगती तो फिर बताओ भूख के बिना क्या अन्न खाया जाता है।

साभार- जंभसागर

श्रद्धा और प्रेम की महिमा

पूर्ण श्रद्धा होने पर भगवान मिलने में विलम्ब नहीं करते, यदि थोड़ी कमी भी रह जाए तो भी मिल सकते हैं। उनके मिलने में प्रेम और करुण भाव की आवश्यकता होती है। भगवान से प्रेम करने के उद्देश्य से पहले सबसे प्रेम करें। सबसे प्रेम करने से ही भगवान खुश होते हैं। भगवान के सभी नाम बराबर प्रेम बढ़ाने वाले हैं, परन्तु जिसकी जिस नाम में श्रद्धा हो, उसका उसी से प्रेम बढ़ जाता है। करुण भाव हो जाने पर तो भगवान क्षणभर में दर्शन दे सकते हैं, क्षण भर में सारे पाप नष्ट कर वे प्रकट हो जाते हैं। भगवान के सिवाय हमारा कोई नहीं है।

श्रद्धा और प्रेम की महिमा वर्णन किया जाये तो भरत जी का उदाहरण अति उत्तम है। भरत जी अपने ननिहाल से आते ही अपनी माता से पूछते है कि मां पिताजी कहां है? माता ने कहा कि तुम्हारे पिताजी उत्तम गति को प्राप्त हो गये है। पिताजी की मृत्यु का समाचार सुनकर दोनों भाई रोने लगे और मां से पूछा मरते समय पिताजी ने मुझे राम के हाथ नहीं सौंपा।

भरत जी ने पूछा कि मरते समय पिताजी क्या कह रहे थे? कैकई बोली- पिताजी हाय राम! हाय सीते! हाय लक्ष्मण! ऐसा कहा था। क्या राम भैया उस समय नहीं थे, तब कैकई ने सारी बातें कह सुनाई। माता की बातें सुनकर भरत जी गिर पड़े। जिस राम के आश्रित होकर मैं अपना जीवन बिताना चाहता हूँ, उनके साथ माता ने ऐसा व्यवहार किया। जैसे कोई मछली को जल से बाहर निकालकर जीवित रखना चाहे, उसी प्रकार मैं राम के वियोग में कैसे जी सकूंगा। मछली के लिए जल का संयोग मेरे लिए राम का संयोग आवश्यक है। उनको वन में भेजकर मुझे जीवित देखना चाहती हो। भरत जी माता कौशल्या के पास गए, कहा- जननी! मैं इस बात से बिल्कुल सहमत नहीं हूं, यदि राम के वन में जाने में मेरी थोड़ी सी भी सलाह हो तो मुझे घोर पाप लगे। कौशल्या जी ने बहुत समझाया, अपने कपड़े से आंसू पोंछते हुए कहा- राम जाते समय मुझसे कह गये थे कि भरत मेरे से भी अधिक तुम्हारी सेवा करेंगे। भरतजी रात भर कौशल्या के पास रहे, प्रातः काल गुरुजी आए। राजा की आज्ञा सुनकर राजगद्दी की बात कही। भरत जी ने कहा- मैं इसका अधिकारी नहीं हूँ। हम लोग रघुनाथ जी के पास चलें, उनको वापस यहां ले आएं। सब लोग तैयार हो गये। भरतजी पैदल चलने लगे, सब लोग पैदल चलने लगे। लोगों का दुःख देखकर माँ बोली-भरत बेटा रथ पर बैठ जाओ, भरत ने कहा- माँ प्रभु पैदल गये हैं तो मेरा कर्त्तव्य है कि सिर के बल चलूं, पर चला नहीं जाता। भरत जी का राम प्रभु के प्रति कैसा उत्तम व्यवहार व श्रद्धा और प्रेम है।

-ब्यूटी बिश्नोई सुपुत्री श्री सुभाष चन्द्र
गांव- सुल्तानपुर खद्दर

सम्पादकीय

संघे शक्तिः कलियुगे

फूल-फूल खिलकर बगिया बन जाते हैं, बूंद-बूंद मिलकर नदियां बन जाती हैं, ईंट-ईंट मिलकर महल बन जाते हैं, जो शक्ति रस्से में होती है वह एक धागे में नहीं होती, जो ताकत एक गट्ठे में होती है वह तिनके में नहीं होती है। इसलिए विभिन्न राष्ट और समाज एकता पर बल देते हैं और कहा भी गया है कि यदि कलयुग में कोई शक्ति है तो वह है संगठन की शक्ति। समाज व राष्ट्र की शक्ति का आधार होती है 'एकता'। संगठन ही सर्वोत्कृष्ट शक्ति है। संगठन ही समाजोत्थान का आधार है। एकता के बिना समाज आदर्श स्थापित नहीं कर सकता क्योंकि एकता जहां अमोघ शक्ति है वहीं विघटन विनाशकारी होता है। बिखरा हुआ व्यक्ति व समाज टूटता है और बिखराव में उन्नति नहीं, अवनति होती है। 500 विघटित व्यक्तियों से 5 संगठित व्यक्ति शक्तिशाली होते हैं। बहुत बड़े विघटित समाज से छोटा सा संगठित समाज श्रेष्ठ होता है।

एकता का अर्थ यह नहीं होता कि किसी विषय पर मतभेद ही न हो। मतभेद होने के बावजूद जो सुखद और सबके हित में है, उसे एक रूप में सभी स्वीकार करें यही वास्तविक सामाजिक एकता है। हमारे समाज को आज एकता की इसी परिभाषा को समझने और अंगीकार करने की आवश्यकता है। आज का युग गला काट प्रतिस्पर्धा का युग है जिसमें केवल संगठित रहकर ही अपना वजूद बचाया जा सकता है। यदि आज हम समाज में विहंगम दृष्टिपात करते हैं तो अत्यन्त कष्ट होता है कि छोटे से बड़े स्तर तक संगठन का अभाव दिखाई देता है, सब अपनी-अपनी डफली और अपना-अपना राग अलापने में मस्त हैं। समाज किस दिशा में जा रहा है इसको लेकर चिंता कम है, मेरी प्रतिष्ठा कैसे बनी रहे इसकी चिन्ता अधिक दिखाई देती है। यह कटु सत्य है कि गत एक दशक में हमारी राजनैतिक शक्ति कमजोर हुई है जिसकी भरपाई हम सामाजिक संगठन को मजबूत करके कर सकते थे परन्तु यहां भी हमसे चूक हुई है।

व्यक्ति कभी भी समाज से बड़ा नहीं होता, इसलिए उसे पहले समाज का हित देखना चाहिए। यदि हम अपने छोटे-मोटे स्वार्थों को छोड़कर समाज के प्रति समर्पित नहीं होंगे और विघटन को बढ़ावा देते रहेंगे तो समझ लेना चाहिए कि समय और भी बुरा आने वाला है। समाज में बड़े लोगों और बड़ी संस्थाओं की जिम्मेवारी भी बड़ी होती है, इसलिए उनका हृदय भी उदार होना चाहिए ताकि सभी भांति के लोग उसमें समा सकें। समाज का हित चाहने वाले सभी शुभचिंतकों को इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि यदि समाज को संगठित रखना है तो किसी एक केन्द्रीय नेतृत्व को स्वीकार करना ही होगा तथा उसे शक्तिशाली भी बनाना होगा। यदि उसमें किसी प्रकार की कोई कमी है तो हमें उसे खोजकर उसका निराकरण करना चाहिए। समाज में संसाधन और प्रतिभा की कोई कमी नहीं है, यदि कमी है तो उसके सदुपयोग की है। संस्थाओं का गठन संसाधन और प्रतिभा का सुमेल करवाकर उनका समाज हित में दोहन करने के लिए होता है। यदि इस अपेक्षा और कसौटी पर कोई संस्था खरी नहीं उतरती, तो उस समाज की दुर्दशा को कोई रोक नहीं सकता।

स्वस्थ विमर्श समाज के लिए हानिकारक नहीं होता अपितु व्यक्तिगत आरोप-प्रत्यारोप संगठन को क्षीण करते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि जब भी सामाजिक मुद्दों पर ऐसे आरोप-प्रत्यारोप का अवसर आता है तो समाज का बुद्धिजीवी व जागरूक वर्ग अपने-आपको ऐसे पृथक् कर लेता है जैसे वे इस समाज के अंग ही नहीं। यह स्थिति किसी भी समाज के लिए सबसे हानिकारक होती है। आज जैसी विकट स्थिति समाज में पैदा हो रखी है, उसमें यह आवश्यक हो जाता है कि बुद्धिजीवी व जागरूक वर्ग अपनी भूमिका अदा करे। यदि हम नजर पसार कर देखें तो हमारे समवर्ती समाजों की तुलना में हम शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार उत्पन्न करने की दृष्टि से कहीं खड़े नजर नहीं आते। परन्तु यदि हम संगठित होकर चलें तो हममें गुरु महाराज की दी हुई इतनी शक्ति है कि हम दूसरों से आगे निकल सकते हैं। प्रश्न यह है कि यदि हम अभी भी नहीं चेते तो क्या होगा?..... आने वाली पीढ़ियां हमें माफ नहीं करेगी। आओ संकल्प लें कि अपने छोटे-मोटे स्वार्थों और पदलिप्सा को छोड़कर केवल वही कार्य करें जो समाज हित में हो और जिससे सामाजिक एकता सुदृढ़ हो। यदि सभी यह संकल्प ले लें तो बिश्नोई समाज को सिरमौर बनने से कोई रोक नहीं पाएगा।

हीरानन्द जी कृत हिंडोलणो (राग मलार)

सरस हिंडोलणो सम्भराथल, झूलै हो साध।टेर।
दोय शील संयम थंभ रोपे, नांव बेड़े आधार।
चार डांडी सरल सुन्दरी, वेद के झणकार।
सत्य धीरज बणे मरवो, जड़त प्रेम सवार।
सुरत पटड़ी बैठ कर, थे झूलो जम्भ द्वार।1।
लोहट हांसा भाव पूरे, जिण लियो उर लाय।
नोरंगी के भात लाये, संग साल्हिया आय।
सिरिया झीमां रूपा मिरिया, पूर्व प्रीत विचार।
दोय कंवर आगै धरै, लाछां आये झूलण वार।2।
भूवा तांतू चली झूलण, नायकी लीवी बुलाय।
अजब देश वीर ते तहां, झाली पोंहती आय।
लोचा गवरां अवर मांगू, पालै वचन विचार।
उदो अतली हेत सेती, झूले जम्भ द्वार।3।
राव दूदा टोहा ठकरा, केल्हण वरसंग लेख।
लोहा पांगल भींया परच्या, सोवन नगरी देख।
रावण गोविंद लक्ष्मण पांडु, मोतिये के भाय।
रणधीर अली सैसा साल्हा, सहजे देत झुलाय।4।
खींया नाथा पूर्व झीमां, राणा प्रीत विचार।
कोजा बूढ़ा लूणा सायर, आये पूल्ह पुंवार।
धन्नो बिछू सुरगण भंवरा, चेला कुलचंद पियार।
पहलाद की परतंग्या कारण, विसन को अवतार।5।
महाराज दाउद घाटम पूरो, थापन हर खेता।
धारू चोखा वैरा प्रीत, हिरदै धरी मंगला रेड़ा।
हासम कासम संता सेती, सदा रहे सहाय।
तास सैंसो उदो दासा, आयो पांचा को समझाय।6।
रावल जेतसी सांगा राणा, लूणों मालदे राव।
महमद खान मुल्ला सधारी, आये परसे पांव।
शाह सिकंदर राव सांतल, शेख सदू जांण।
कान्हा तेजा अल्लू चारण, बलि बलि करत बखाण।7।
हुकम उदो दीन बोल्यो, वील्ह कियो उपदेश।

भावार्थ- आनन्द रस से परिपूर्ण हींडोला सम्भराथल पर लगा हुआ है जिससे कोई कोई विरले साधुजन ही हींड रहे है। यह हींडोला किसका बना हुआ है, यह आगे बतला रहे है। शील संयम रूपी दो खंभे रोपे गये है। परमात्मा विष्णु का नाम ही इस बेड़े रूपी झूले का आधार है। झूले का चार डंडियां ही चार वेद रूपी सबदवाणी है। वेदों की भांति ही स्वर लय की झणकार हो रही है। कहा भी है- **"मोरे सहजे सुन्दर लोतर वाणी"** सत्य तथा धीरज रूपी सौम्य सुगन्ध मय मरवे के नीचे झूला बांध रखा है। सत्य एवं धीरज की छत्रछाया में झूला झूल रहे है। झूले के अनेकों चित्रकारी की गई है। वह सरल शुद्ध सुन्दर प्रेम भाव को प्रगट कर रही है। सुरति यानि चितवृति के पटड़े पर बैठकर जाम्भेश्वर जी के द्वार सम्भराथल पर झूला अवश्य ही झूलें सभी के लिये ही दरवाजा खुला हुआ है।1।

अब आगे इस हींडोलने में हींडने वाले उन साधु भक्तों का नाम गिनाए गए हैं जिन्होंने सम्भराथल आकर समय समय पर झूला झूले हैं। ये सभी नाम स्पष्ट हैं हजूरी शिष्य ही नहीं जाम्भोजी के माता-पिता से आरम्भ करके अन्तिम आलम सूजा सुरजन रायचन्द आदि संतों कवियों को भी गिनाया है कुल नामों की संख्या 83 गिनाई गई है। इनमें जिन लोगों के नाम आए हैं उनकी कथा जम्भसार में वर्णित है तथा कुछ भक्त सन्तों का जीवन चरित्र विस्तार से प्राप्त नहीं हुआ है। प्राय: सभी सन्तों एवं भक्तों का नाम यहां पर एक ही साखी में कवि ने बड़ी ही चतुरता से किया है। यह साखी अपने ढ़ंग की एक ही सम्पूर्ण जाम्भाणी साहित्य में उपलब्ध हुई है। इसलिए इनका अपना महत्व निराला ही है।

साभार - साखी भावार्थ प्रकाश

छंद रेणकी

आतप मँह छाय करे जन जन औ, रुत पावस सिर त्राण करे।
शुभ पवन सुबांटत शीतल सुंदर, विहग सदा जिण पर विहरे।
दिल सूं उपकार करे वह हरदम, जिणरो सभी बखाण करे।
रिषिवर धर रूप अनूपम तरूवर, कायम जग कल्याण करे ॥1॥

तीरथ सरवर क ताल नदी तट, वट गुलर अस्वत्थ के।
बिच ओरण केर बोर बण ओपत, जंगळ गिर पर जोत जळे।
करता बहु नीड विहग घण कलरव, इसडो कुण उपकार करै।
रिषिवर धर रूप अनूपम तरूवर, कायम जग कल्याण करे ॥2॥

मिळतौ घण गूंद छाल मह निरमळ, लाख घणी इणपर लगती।
जप तप जिण हेठ तपै सिध जंगम, भाव समेत करै भगती।
फळ फुल जिणां पर फाबत फूटर, पशु खग कीटक पेट भरे।
रिषिवर धर रूप अनुपम तरूवर, कायम जग कल्याण करे ॥3॥

उम्बर बड पीफ तळ धर आसन, थान दिगंबर देव थपै।
जोगण अरू नवलख जाळ विराजत, नीमड भैरव कष्ट कपै।
कोटिक दस तीन तीन सुर बैठत, रूंख तणी सुभ छांय करे।
रिषिवर धर रूप अनुपम तरूवर, कायम जग कल्याण करे ॥4॥

ओखध तरू आप धनंतर इळ जड,
पात छाल फळ फूल परम।
साजा करतौ उपचार सदा कर, विरछ जगत मँह बैद वरम।
मन तन वप पीड हरत ज्वर हरखत, आप विनां कुण अवर अरे!
रिषिवर धर रूप अनुपम तरूवर, कायम जग कल्याण करे ॥5॥

हरियल हरियल वन भाखर हरदम, फूल तणां चितराम फबै।
पीछी धर हाथ सदा परमेसर, सुंदर ढोळत रंग सबै।
परतख जगदीश तणां पयगंबर, सब रा मन रा सोग हरे।
रिषिवर धर रूप अनूपम तरूवर, कायम जग कल्याण करै ॥6॥

लंगर मरू, जंगल रूंख चलावत ,फळ कंद फूल घणाई फळै।
अनपूरण आवड कर घण अनुग्रह, बिरवड बण बण कै कै।
इण री महिमा छायी मह अवनी, मन ओरण सुण मोद भरे।
रिषिवर धर रूप अनुपम तरूवर, कायम जग कल्याण करै ॥7॥

हरफ मन निरखत होवत हरखित, दरखत दुख दुरदान्त दळे।
सुख उपजत तौ कर सैवत अहनिस, घन मन रा अंधार गळै।
मत धर उर दोष मनुज रा मुनिवर, कल्पक नरपत अरज करै।
रिषिवर धर रूप अनूपम तरुवर, कायम जग कल्याण करै ॥8॥

-संग्राम सिंह सोढा, सचियापुरा

भगवत्तत्त्व मीमांसा और गुरु जाम्भो जी

गतांक से आगे .....

गीता में भगवत्तत्त्व

गीता को सभी शास्त्रों का सार या निचोड़ माना जाता है। इसमें अनेक दार्शनिक विषयों की गंभीर विवेचना हुई है। इन्हीं विषयों के अन्तर्गत 'भगवत्तत्त्व' भी आता है। गीता में 'भगवत्तत्त्व' को अक्षर, अव्यक्त, परमगति, परमधाम, परमात्मा इत्यादि नामों से व्यक्त किया गया है–

अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तस्तमाहुः परमां गतिम्।
यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम॥[31]

गीता में कहा गया है कि भगवान स्वयं अज, अव्ययात्मा और समस्त भूत प्राणियों का ईश्वर होते हुए भी इसी योगमाया द्वारा अपने को प्रकट करते हैं–

अजोऽपिसन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्।[32]

भगवान के जन्म और कर्म दूसरों की तरह प्राकृत नहीं होते अपितु दिव्य, चिन्मय होते हैं–

जन्म कर्म च मे दिव्यम्।[33]

सर्वभूतों के अन्तर में जो ईश्वर सत्ता है, वह क्षर है–

क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थेऽक्षर उच्यते।[34]

'भगवत्तत्त्व' की गूढ़ता की ओर संकेत करते हुए भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि 'मेरी उत्पत्ति को न देवता लोग जानते हैं और न महर्षिजन।' कारण यह है कि मैं ही सबका जन्मदाता हूँ–

न ये विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः।
अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः॥[35]

परमात्मा का निर्गुण तत्त्व मन–वाणी का अविषय है। वह सत्–असत् से विलक्षण है–

ज्ञेयं यत तत्प्रवक्षयामि यज्ज्ञात्वामृतमश्नुते।
अनादिमत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते॥[36]

गीता के अनुसार सच्चिदानन्दघन निर्गुण परब्रह्म परमात्मा के किसी एक अंश में प्रकृति है। उस प्रकृति के प्रभाव से ही वह सृष्टि की रचना करता है और इसी कारण सगुण चेतन सृष्टिकर्त्ता ईश्वर कहलाता है। वही आदि पुरुषोत्तम, माया विशिष्ट आदि नामों से अलंकृत किया जाता है। प्रकृति को लेकर ही उसमें समस्त जीवों की स्थिति है। श्रीकृष्ण कहते हैं, 'मैं वासुदेव ही सम्पूर्ण जगत की उत्पत्ति का कारण हूँ और मेरे से ही सारा जगत चेष्टा करता है–

अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वे प्रवर्तते।
इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भाव समन्विताः॥[37]

गीता में भगवान के सगुण सविशेष तथा निर्गुण निर्विशेष का परिचय देते हुए दोनों को अभिन्न तत्त्व माना गया है, 'वह परमात्मा सभी चक्षुरादि इन्द्रियों के रूपादि वृत्तियों के आकार से भासित होता है अथवा सभी इन्द्रियों और तद्विषयों को आभासित करता है तथा सभी इन्द्रियों से रहित है। वह सत्त्वादि गुणों से रहित और सत्त्वादि गुण तथा उसके परिणामों का भोक्ता है–

सर्वेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम्।
असक्तं सर्वभृच्चैव निर्गुणं गुणभोक्तृ च॥[38]

जिस प्रकार सुवर्ण कटक, कुण्डल आदि आभूषणों के और जल जलतरंगों के बाहर–भीतर रहता है, उसी प्रकार परमेश्वर चर–अचर जगत् के बाहर–भीतर विद्यमान है–

बहिरन्तश्च भूतानामचरं चरमेव च।
सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थं चान्तिके च तत्॥[39]

सब प्राणियों में वह परमेश्वर विभागरहित एक है, न कि प्रति शरीर भिन्न, क्योंकि वह आकाश की तरह व्यापक है–

अविभक्तं च भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम्।
भूतर्भतृ च तज्ज्ञेयं ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च॥[40]

इस प्रकार गीता में 'भगवत्तत्त्व' की बहुत ही विशद् व गहन विवेचना हुई है। भगवत् स्वरूप, उसकी महिमा, शक्तियों, कार्यों की जितनी स्पष्ट विवेचना गीता में प्रस्फुटित हुई है, वह अन्यत्र दुर्लभ है।

'भगवत्तत्त्व' की विवेचना संहिताओं, स्मृतियों व रामायण, महाभारत और संत साहित्य में भी प्रसंगानुसार हुई है जो वेद, उपनिषद्, पुराण और गीता में व्यक्त भगवत्तत्त्व का प्रतिबिम्ब मात्र है, इसलिए इनकी यहाँ पृथक् चर्चा अनावश्यक होगी।

जम्भवाणी में भगवत्तत्त्व

गुरु जाम्भो जी के सबदों का सामूहिक नाम जम्भवाणी है। इस वाणी में गुरु जाम्भोजी द्वारा प्रसंगानुसार समय-समय पर उच्चरित 120 सबदों का संग्रह है। ये 'सबद' गुरु जाम्भो जी ने जिज्ञासुओं की शंका समाधान या उनकी किसी जिज्ञासा को पूर्ण करने के लिए उच्चरित किए थे। 'जम्भवाणी' में जीवन व जगत् से जुड़े अनेक विषयों की विशद् व गहन विवेचना हुई है। गुरु जाम्भोजी ने इस वाणी में 'भगवत्तत्त्व' की प्रसंगानुसार चर्चा की है जो 'भगवत्तत्त्व' को समझने में अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

जम्भवाणी में 'भगवत्तत्त्व' को 'विष्णु' नाम से अभिहित किया गया है तथा उसे निर्गुण माना गया है। गुरु जाम्भो जी ने कहा है कि विष्णु के सहस्रों नाम हैं- 'सहस्र नाम सांई भल शिम्भू।[41] इन सहस्रनामों से कतिपय नामों का प्रयोग जम्भवाणी में मिलता भी है जैसे- स्वयंभू[42], सुरपति[43], साम्य[44], परमतंत[45], सारंगधर[46], मुरारी[47], रहमान, रहीम, करीम[48], खुदा[49], अल्ला[50], राम[51], कृष्ण[52], नारायण[53], अलख[54], अपरम्पर[55], अजोनी[56] आदि।

गुरु जाम्भो जी ने भगवत्तत्त्व को अनादि बताते हुए कहा है कि जब पवन, पानी, धरती, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र, माता-पिता, चौरासी लाख योनियाँ, अट्ठारह भार वनस्पति आदि कुछ भी नहीं था तब केवल धंधूकार ही था, तब भी मैं (भगवत्तत्त्व) था-

जद पवण न होता पाणी न होता, न होता धर गैणारूं।
चन्द न होता सूर न होता, न होता गिंगदर तारूं॥

****

म्हे तदपण होता अब पण आछै, बल-बल होयसा।
कह कद कद का करूं विचारूं॥[57]

जब सृष्टि का प्रलय हो जाता है तब भी आदि ब्रह्म शब्द रूप में मौजूद रहता है और फिर उसी से सृष्टि का विकास होता है-

आद शब्द अनाहद वाणी, चवदै भवन रह्या छल पाणी।
जिहिं पाणी से इण्ड उपना, उपना ब्रह्म इन्द्र मुरारी॥[58]

गुरु जाम्भो जी अपनी वाणी में कहते हैं कि जब केवल धंधूकार था तब निरंजन परमात्मा अपने आप ही उत्पन्न हुए थे। तब चन्द्रमा, सूर्य, तीनों लोक, तारामण्डल, नक्षत्र, तिथि, वार, पूर्णिमा, अमावस्या, समुद्र, पर्वत, स्त्री, पुरुष कुछ भी नहीं था-

आप अलेख उपन्ना शिभूं, निरह निरंजन धंधूकारूं।
आपै आप हुआ अपरम्पर, हे राजेन्द्र लेह विचारूं।
नै तद चंदा नै तद सुरूं, पवण न पाणी धरती आकाश न थीयों।
न तद मास न वर्ष न घड़ी न पहरूं, धूप न छाया ताव न सीयों॥

****

आपै आप उपन्ना शिभूं, निरह निरंजन धन्धूकारूं।
आपों आप हुआ अपरम्पर, हे राजेन्द्र लेह विचारूं॥[59]

उस परमात्मा का धाम सूर्य, चन्द्रमा, तारों आदि से भी उपर है, जहाँ केवल धंधूकार (शून्य) है-

उरधक चन्दा निरधक सूरूं, नवलख तारा नेड़ा न दूरूं।
नवलख चन्दा नवलख सूरूं, नवलख धंधू कारूं।
तांह पररै तेपण होता, तिंह का करूं विचारूं॥[60]

नौखण्ड और पृथ्वी उसी परमात्मा से प्रकट हुए हैं और उसके आदि मूल का भेद कोई विरला ही जानता है-

नवखण्ड पृथिवी प्रगटियों,
कोई विरला जाणत म्हारी आद मूल का भेवों।[61]

वह परमात्मा शून्य मण्डल का राजा (स्वामी) है-

जुग अनन्त अनन्त वरत्या, म्हे सुनि मण्डल का राजूं॥[62]

सातों पतालों, तीनों लोकों, चौदह भवनों, आकाश सभी प्राणियों के बाहर भीतर वही परमात्मा विराजमान है-

सप्त पताले तिहूं त्रिलोके, चवदा भवने गगन गहीरे।
बाहर भीतर सर्व निरन्तर, जहाँ चीन्हों तहां सोई॥[63]

पवन, पाणी, धरती, आकाश, पर्वत, वनस्पति,

सूर्यादि सभी उसी परम तत्त्व के अधीन है–

पवणा पाणी जमी मेहूँ, भार अठारह परबत रेहूँ।
सूरज जोति परै परेरै, एति गुरु के शरणै॥[64]

नदि में नीर, सागर में हीरों की भांति वह परमात्मा पवन रूप में सर्वत्र विराजमान रहता है–

नदिये नीरूं सागर हीरूं, पवणा रूप फिरै परमेश्वर॥[65]

जिस प्रकार तिल में तैल (अदृश्य रूप में) रहता है उसी प्रकार पाँच तत्त्वों से निर्मित इस शरीर में परमात्मा (अदृश्य रूप में) रहता है–

ऊंचै नीचै करै पसारा, नही दूजै का संचारा।
तिल में तेल पहुप में वास, पाँच तंत में लियो प्रकाश॥[66]

जिस प्रकार पुष्प में सुगंध (अदृश्य रूप में) रहती है उसी प्रकार सर्वत्र परमात्मा की लीला (अदृश्य रूप में) रहती है–

पोहप मध्ये परमला जोति, यूं सुरग मध्ये लीलूं॥[67]

इस प्रकार से अदृश्य (निराकार) रूप में रहने वाला परमात्मा अधर्म बढ़ जाने पर, सज्जनों की रक्षा हेतु साकार रूप में प्रकट होते हैं–

जां जां शैतानी करै उफारूं, तां तां महतं ज फलियो॥[68]

हमें उस परमात्मा (विष्णु) का जप करना चाहिए क्योंकि वह संतों भक्तों का उद्धार करने वाला है। उसके प्रसन्न होने पर मोक्ष रूपी लाभ मिलता है–

विसन विसन तूं भणि रे प्राणी, साचां भगतां उधरणौ।
तिंह तूठे मोख मुगति ज लाभै॥[69]

परमात्मा को जानना एक दुष्कर कार्य है। जो कहते हैं कि मैंने परमात्मा के विषय में सब कुछ जान लिया है, इसका मतलब उसने कुछ भी नहीं जाना और जो कहता है मैंने कुछ नहीं जाना, इसका मतलब उसने फिर भी कुछ–कुछ जाना है–

जां कुछ जां कुछ जां कुछ न जांणी।
नां कुछ नां कुछ तां कुछ जांणी॥[70]

इस प्रकार गुरु जाम्भोजी ने अपनी वाणी में 'भगवत्तत्त्व' की बहुत ही व्यवहारिक व विशद् विवेचना की है व इसके गूढ़ गंभीर भेद को सरल भाषा व लोक प्रचलित प्रतीकों के माध्यम से प्रकट किया है।

गुरु जाम्भो जी: भगवत्तत्त्व के परिप्रेक्ष्य में

गुरु जाम्भोजी का जीवन चरित्र, जीवनोद्देश्य महनीय व्यक्तित्व व अद्भुत कार्यों से यह विदित होता है कि वे कोई सामान्य संत या पुरुष नहीं थे, अपितु 'भगवत्तत्त्व' थे। इस विषय में प्रमाण रूप में उनकी वाणी मौजूद है जो स्वत: सिद्ध है और इसे जांभाणी कवियों ने पाँचवां वेद कहा है–

केवल न्यांन सारां सिरै, सब्र जौंण जाण सकल।[71]
पांचवो न्यान न उपजै, सकलां सिरि सोई अकल॥ –अल्लूजी

गुरु पांचमां वेद पढ़ै मुख परगट, सो गुरुवाणी
सांभलियो॥[72] –गोकलजी

अपनी वाणी में गुरु जाम्भोजी अपने विषय में बताते हैं कि–

जुगां जुगां को जोगी आयो, सतगुरु सिद्ध बतायो॥[73]

गुरु जाम्भो जी ने अपनी वाणी में अपने पूर्व के नौ अवतारों का विस्तार से वर्णन करते हुए स्पष्ट रूप से कहा है कि वे नौ अवतार मेरे ही थे–

अइयालो अपरंपर वाणी, म्हें जपां न जाया जीऊं।
नव अवतार नमो नारायण, तेपण रूप हमारा थीयूं॥[74]

अपने अवतार लेने के कारण को विस्तार से बताते हुए उन्होंने कहा है कि मैं प्रह्लाद बाड़े के बिछुड़े बारह करोड़ जीवों का उद्धार करने आया हूँ–

सुरगां हूंते शिंभू आयो, कहो कूणां के काजै।
नर निरहारी एक लवाई, परगट जोत बिराजै।
प्रह्लादा सूं वाचा कीवी, आयो बारां काजै।
बारा मैं सूं एक घटै तो, सू चेलो गुरु लाजै॥[75]

इसी बात को वे एक सबद में भी कहते हैं–

मैं वाचा दई प्रहलादा सूं, सुचेलो गुरु लाजै।
कोड़ तेतीसूं बाड़े दीन्ही, तिनकी जात पिछाणो॥[76]

इस तथ्य को उन्होंने अपनी वाणी में बार–बार विश्वासपूर्वक दोहराया है। उनका भौतिक शरीर भी प्रकृति के अधीन नहीं था। सबदवाणी के प्रसंगों और जाम्भाणी साहित्य से विदित होता है कि वे निराहारी थे, उनकी पीठ दिखाई नहीं देती थी और उनके शरीर से

सुगंध आती थी। उनकी छांह भी नहीं पड़ती थी और पांवों के निशान भी नहीं बनते थे। वे नींद भी नहीं लेते थे। उद्धरण कान्हावत इस विषय में उनसे प्रश्न करता है–

उद्धरण कान्हावत यूं कह्यो, देवजी किसो आचार।
पेठ पीठि दीस नहीं, ताका करो विचार॥[77]

गुरु जाम्भो जी उत्तर देते हैं–

मोरे छाया न माया, लोही न मासूं।
रक्तूं न धातूं मोरे माय न बापूं॥[78]

फिर वीदा पूछता है–

वीदा जोधावत कहै, सोरम आवै देव।
डील तुम्हारो महीम है, हमें बतावों भेव॥[79]

गुरु जाम्भो जी उत्तर देते हैं–

मोरे अंग न अलसी तेल न मलियो, ना परमल पिसायों।
जीमत पीवत भोगत विलसत दीसां नाही, म्हापण को आधारूं॥[80]

जम्भवाणी से ज्ञात होता है कि उन्होंने राव वीदा को एक ही समय में अनेक स्थानों पर हवन करके दिखाया था।[81]

गुरु जाम्भोजी के जीवन चरित्र का सबसे प्रमाणिक आधार जाम्भाणी साहित्य है जो उनके समकालीन व परवर्ती कवियों द्वारा रचित है। इस साहित्य में गुरु जाम्भो जी की भगवत्ता स्वयं सिद्ध है। उनके अलौकिक जीवन चरित्र व अद्‌भुत कार्यों को लेकर जांभाणी साहित्य में अनेक छन्द, साखियाँ, हरजस व आख्यान काव्य मिलते हैं जिनकी विस्तृत चर्चा यहाँ सम्भव नहीं है। जांभाणी कवियों के एक–दो उदाहरण के साथ इस विषय को यहीं विराम देते हैं क्योंकि 'हरि अनन्त, हरिकथा अनन्ता'।

आदि अनादि जुगादि को जोगी, लोहट घर अवतार लियो है।
धन ही धन भाग बड़ो, जिन हांसल कुं हर मात कहयो है।
होत उजास प्रकास भयो, रैन घटी जैसे भोर भयो है।
कोड़ द्वादस काज कै तांई, केसोदास भणै थल आय रहयो है।[82]
प्रगटे जद रूप निरंजन, जांभेसर नाम कहावन कूं।
भगवां कपड़ा करि जाप जपै, संभराथल जाण जगावन कूं।
गुरु ग्यान की ध्यान को ध्यात धरै, बहू लोकन कूं समझावन कूं।
धरणी उर जंघ पांव न धरहूं, बल हूं बल हूं इन पावन कूं॥[83]

संदर्भ :-

1. विष्णु पुराण: 6/5/74; 2. अमरकोष: पृ. 616; 3. विष्णु पुराण: 6/5/75; 4. वही: 6/5/78; 5. (संपा.) रामचन्द्र पाठक; आदर्श हिन्दी शब्दकोश; पृ. 303; 6. बृहदारण्यो–कपनिषद्: 4/4/22; 7. वह्निपुराण: वैष्णवक्रियायोग; यमानुशासननामाध्याय; 8. ऋग्वेद: 10/129/1; 9. वही: 10/129/2; 10. वही: 10/129/7; 11. अथर्ववेद: 10/8/44; 12. शुक्ल यजुर्वेद: 32/1; 13. वही: 32/4; 14. वही: 31/3; 15. वही: 31/19; 16. श्वेताश्वतरोपनिषद्: 6/7; 17. वही: 6/8; 18. वही: 6/9; 19. मुण्डकोपनिषद्: 3/1/8; 20. श्वेताश्वतरोपनिषद्: 1/15; 21. कंठोपनिषद्: 2/2/12; 22 वही: 2/2/15; 23. अध्यात्मोपनिषद् /30; 24. श्वेता–श्वतरोपनिषद्: 4/9; 25. विष्णु पुराण: 6/5/71; 26. वही: 6/5/66–69; 27. देवी पुराण: 45/27; 28. ब्रह्मवैवर्त पुराण: 54/32; 29. श्रीमद्‌भागवत पुराण: 10/13/39; 30. वही: 10/10/32–33; 31. श्रीमद्‌भगवद् गीता: 4/14; 32. वही: 4/6; 33. वही: 4/9; 34. वही: 15/16; 35. वही: 10/2; 36. वही: 13/12; 37. वही: 10/8; 38. वही: 13/14; 39. वही: 13/15; 40. वही: 13/16; 41. (संपा.) कृष्णानन्द आचार्य, जंभसागर: पंचम संस्करण: पृ. 183/93; 42. वही: पृ. 28; 43. वही: पृ. 186; 44. वही: पृ. 11; 45. वही: पृ. 89; 46. वही: पृ. 11; 47. वही: पृ. 65; 48. वही: पृ. 65; 49. वही: पृ. 33; 50. वही: पृ. 28; 51. वही: पृ. 65; 52. वही: पृ. 11; 53. वही: पृ. 28; 54. वही: पृ. 49; 55. वही: पृ. 28; 56. वही: पृ. 28; 57. वही: पृ. 24–26/4; 58. वही: पृ. 181/93; 59. वही: पृ. 204–206/105; 60. वही: पृ. 173–174/89; 61. वही: पृ. 172/88; 62. वही: पृ. 161/83; 63. वही: पृ. 83/40; 64. वही: पृ. 99/53; 65. वही: पृ. 218/115; 66. वही: पृ. 199/101; 67. वही: पृ. 125/66; 68. वही: पृ. 123/65; 69. वही: पृ. 10–11/नवण मंत्र; 70. वही: पृ. 47/19; 71. डॉ. हीरालाल माहेश्वरी: जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य, पृ. 583; 72. वही: पृ. 421; 73. संपा. कृष्णानन्द आचार्य: जंभसागर; पृ. 180/92; 74. वही: पृ. 26/5; 75. वही: पृ. 222/118; 76. वही: पृ. 214/112; 77. वही: पृ. 21/प्रसंग; 78. वही: पृ. 21/2; 79. वही: पृ. 22/प्रसंग; 80. वही: पृ. 22/3; 81. वही: पृ. 126–139/67; 82. संपा. कृष्णानन्द आचार्य; पोथो ग्रंथ ज्ञान; पृ. 129; 83. वही: पृ. 134

जांभाणी रचनाकार संत श्रीपरमानन्दजी बणियाल

गतांक से आगे.....

(2) जीवनी : परमानन्दजी का समय सम्वत् 1750 से 1845 तक का माना गया है। ये रासीसर के रहने वाले बणियाल गोत्रीय जाट थे। इनके गुरु का नाम रासोजी तथा दादा-गुरु का नाम दामजी अथवा दामोजी था। दामोजी का समय सम्वत् 1680 से 1768 माना गया है। गुरु रासोजी का समय सम्वत् 1700 से 1800 के मध्य माना गया है। डॉ. माहेश्वरी ने जिन मुकनूंजी या मुकनोजी को इनका पूर्व गुरु माना है, वे इनके दादा-गुरु के शिष्य होने से इनके काका-गुरु ठहरते हैं जिनका समय सम्वत् 1710 से 1790 माना गया है। एक गुरु-भाई का शिष्य, दूसरे गुरु-भाई की चद्दर ओढ़कर उत्तराधिकारी बना करता है, ऐसी परम्परा सभी सम्प्रदायों में है। हो सकता है, परमानन्दजी ने भी मुकनोजी की आज्ञा से या रासोजी के आग्रह से रासोजी का शिष्यत्त्व ग्रहण कर लिया हो।

(3) रचनाएँ : श्री परमानन्दजी ने प्रसंगों में अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। संतों ने जिनको अंग कहा है उनको इन्होंने प्रसंग कहा है। वास्तव में अंग, प्रसंग आदि वह शीर्षक है जिनके तहत आने वाली समस्त रचनाएँ विषय विशेष का प्रतिनिधित्व करती हैं। स्वयं परमानन्दजी ने अपनी वाणी में उपलब्ध प्रसंगों की संख्या 102 बताई है। पोथे में निम्नलिखित प्रसंग प्रकाशित हुए हैं। श्री कृष्णानन्दजी आचार्य ने इन कुल साखियों की संख्या 900 पोथे की भूमिका में लिखी हैं किन्तु 900 की संख्या गिनने पर मिलती नहीं है। हम नीचे शीर्षक व उसके सामने उनमें उपलब्ध छन्दों की संख्या बता रहे हैं-

प्रसंग	संख्या	कुल संख्या
1. नमस्कार	12	12
2. गुरु महिमा माहात्म्य	8	20
3. गुरु हरिजन अधिकार	5	25
4. गुरु गम प्राप्ति	1	26
5. गुरु ग्यान	2	28
6. सतगुरु विमुख	2	30
7. सत्य-असत्य सीख गुरु पारख	6	36
8. हरि गुरु सुमति गुरु	12	48
9. सिंवरण नाम चेतावणी	14	62
10. सिंवरण नाम महिमा माहात्म्य	23	85
11. सिंवरण सुकृत सतसंगति	9	94
12. हरि गुण नाम अगाधता	1	95
13. नाम पतिव्रत	1	96
14. नाम निर्शस	4	100
15. हरि नाम भक्ति भरोसा	11	111
16. हरि प्राप्ति विधि	6	117
17. हरि सनमुख विमुख लच्छण	6	123
18. चितवन चिंता	3	126
19. विरह	17	143
20. विरह विलाप	10	153
21. छिन बिछोह	18	171
22. सजन गुण वरणन ब्रह्म	3	174
23. विरह पारख	6	180
24. विरह विनती प्रसंग	6	186
25. विरह प्रीति प्रभाव	11	197
26. प्रेम प्रीति पारख प्रीति स्नेह	15	212
27. सपरस प्रेम	3	215
28. प्रेम मगनता	5	220
29. प्रेम प्रवेस कठिनता	8	228
30. प्रेम महिमा माहात्म्य	11	239
31. परचा	7	246
32. रस	3	249
33. जरणा	3	252
34. पतिव्रत	5	257
35. चिंतावणी	17	274
36. सुपन	5	279
37. मन	10	289
38. सुगम मार्ग	6	295

39. माया		23	318	75. निंदा		5	524
40. लोभ		13	331	76. निगुणा		9	533
41. करणी बिना कथनी		4	335	77. विनती		2	535
42. करणी		3	338	78. कर्त्ता सो भोक्ता		2	537
43. कामी		14	352	79. परख बिना	कवित्त	1	538
44. सहज		1	353		साखी	14	552
45. साच		10	363	80. होतब		10	562
46. भ्रम मेट		6	369	81. जती	साखी	8	570
47. भेख		11	380		कवित्त	5	575
48. कुसंगत		5	385	82. सती	कवित्त	2	577
49. संगति		2	387		साखी	7	584
50. असाध		3	390	83. गृहचारी		6	590
51. साध		5	395	84. दया निरतरी		8	598
52. साध निस्प्रेही		6	401	85. निर्दयी		9	607
53. साध महिमा		7	408	86. निंदा उपदेस		18	625
54. अधबीच		3	411	87. मित्र प्रसंग	कवित्त	2	627
55. सारग्राही		2	413		साखी	4	631
56. विचार		3	416	88. निगुण		9	640
57. उपदेस		6	422	89. सुगुण		9	649
58. बेसास		13	435	90. भय		10	659
59. पिछाणन		3	438	91. विनती		18	677
60. विरक्ताई		7	445	92. वेलि दृष्टांत		5	682
61. समर्थाई		6	451	93. अग्यान		17	699
62. कुसबद		3	454	94. ग्यान दग्धी		36	735
63. सबद		1	455	95. ग्यान की भूमि		2	737
64. जीवित मृतग		6	461	96. दुविधा		9	746
65. चितकपटी		2	463	97. दुविधा विध्वंस		4	750
66. गुरु सोधन		5	468	98. हित करणी	साखी	34	784
67. प्रीति सनेह		4	472		कवित्त	1	785
68. सूरातन		18	490	99. छत्र	कवित्त	6	791
69. काल		14	504		साखी	2	793
70. जीवण		4	508	100. गिणती विस्तार		37	830
71. बिन पारख		4	512	101. विष्णुस्तोत्र	छंद	14	844
72. पौरस पारख		2	514		कवित्त	2	846
73. उपजण		3	517		साखी	5	851
74. कस्तूरिया मृग		2	519	102. ऊमरि	साखी	20	871

	कवित्त	14	885
	सोहलो	1	886

स्वयं परमानन्दजी ने 102 प्रसंग होने की बात कही है और गिनती करने पर 102 प्रसंग ही मिलते हैं। छन्दों की कुल संख्या 886 मिलती है, न कि 900 जैसा श्री कृष्णानन्दजी आचार्य ने लिखा है।

उक्त पोथे में निम्न 15 रागों में कुल 39 हरजस छपे हैं–

1.	आसा	2 पद
2.	गुंड	1 पद
3.	काफी	3 पद
4.	वसंत	3 पद
5.	काफी	1 पद
6.	धनाश्री	8 पद
7.	गवड़ी (गौड़ी)	2 पद
8.	भैरूं	1 पद
9.	कल्याण आरती	1 पद
10.	खम्भायची	6 पद
11.	सोरठि	3 पद
12.	सारंग	5 पद
13.	परज	1 पद
14.	ढाल लुहर की	1 पद
15.	ढाल बधावा	1 पद
		39 पद

अंगबद्ध वाणी व पदों के अतिरिक्त श्री परमानंद ने एक विष्णुस्तोत्र 22 छंदों का; गद्य में एक वार्ता 'तीन युगों की वार्ता, नामक शीर्षक से तथा एक रक्षा और एक बद्रीनाथ स्तोत्र लिखा है। रक्षा के पूर्व पद्य व गद्यमयी पुष्पिकाएँ हैं जिनकी विस्तृत जानकारी हमने ऊपर दे दी है।

अब रचनाओं के सम्बन्ध में डॉ. माहेश्वरी की जानकारी की समीक्षा करना भी अत्यावश्यक है। डॉ. माहेश्वरी ने लिखा है–

"(1) प्रसंग 104 छन्द 866 (दोहे 836, कवित्त 30) (प्रति संख्या 227)। विविध विषयों पर लिखे गये प्रासंगिक दोहे। कवि ने दोहों को ही साखी कहा है। उसने पुष्पिका में 102 प्रसंगों का उल्लेख किया है– **'ऐती एक सो दोय प्रसंग संपुरण समापीत'** किन्तु बीच में संख्या भूल से कुल प्रसंग 106 होते हैं। इनमें अथ विसन असतोत्र (संख्या 103) तो एक स्वतंत्र रचना है और सोहलो (संख्या 106) की गणना हरजसों में स्वयं कवि ने की है; अत: कुल प्रसंग 104 ही होते हैं।

(2) हरजस 41 (प्रति संख्या 201, 227)

(3) साखियाँ 5 (प्रति संख्या 201, 227)

(4) विसन असतोत्र 22 छन्द (प्रति संख्या 227)

(5) फुटकर छन्द कवित्त (छप्पय) 2 तथा दोहे 12 (प्रतिसंख्या 201,227)

(6) गद्य में साका (प्रति संख्या 201)

(7) छमसरी (संवत्सरी) प्रति संख्या 404।"

–जांभोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य, पृ. 861

डॉ. माहेश्वरी ने उक्त निर्णय मात्र ही नहीं दिया है, उन्होंने उक्त प्रसंगों के शीर्षक, हरजसों की पहली पंक्तियाँ भी लिखी हैं जिससे इस प्रकाशित पोथे में विरह पारख का एक प्रसंग है जबकि डॉ. माहेश्वरी ने 23वें एवं 24वें क्रमांक पर विरह पारख का ही प्रसंग दो बार लिखा है। छंद संख्या दोनों स्रोतों में 6 व (2+4) ही है। अत: यहाँ छन्द संख्याओं का तो अंतर नहीं है किन्तु डॉ. माहेश्वरी की गणना में एक प्रसंग बढ़ गया है।

पोथे में 26वें प्रसंग 'प्रेम प्रीति पारख प्रीति सनेह' में 16 साखियाँ हैं जबकि डॉ. माहेश्वरी ने इसमें 15 साखियाँ होना लिखा है। अत: यहाँ डॉ. माहेश्वरी की कुल संख्या में 1 छंद की कमी हुई है।

पोथे में 39वें क्रमांक पर माया का प्रसंग है जिसमें 23 साखियाँ हैं जबकि डॉ. माहेश्वरी ने यहाँ भी माया के प्रसंग में 15 साखियाँ तथा मान के प्रसंग में 8 साखियाँ बताई हैं। इस प्रकार साखियों की संख्या तो दोनों स्रोतों में समान हो गई हैं किन्तु डॉ. माहेश्वरी की सूची में एक प्रसंग बढ़ गया है।

पोथे के 79वें प्रसंग में कवित्त एक व साखियाँ 14 हैं जबकि डॉ. माहेश्वरी ने साखियाँ 14 के स्थान पर 17 होना लिखा है। इस प्रकार डॉ. माहेश्वरी की गणना में यहाँ 3 साखियाँ बढ़ गई हैं।

पोथे के 87वें प्रसंग में 2 कवित्त व 4 साखियाँ हैं जबकि डॉ. माहेश्वरी ने 3 साखियाँ होना लिखा है। वैसे देखा जाए तो पोथे में 4 नहीं, 3½ साखियाँ हैं। संभव है, लिखते समय कवि से एक पंक्ति लिखना छूट गई हो। अत: हमें अधूरी साखी को भी पूरी ही मानकर 4 संख्या माननी होगी। यहाँ डॉ. माहेश्वरी की गणना में एक की संख्या कम हो गई है।

पोथे के 93वें प्रसंग 'अग्यान' में 17 साखियाँ हैं जबकि डॉ. माहेश्वरी ने 16 साखी होना लिखा है। इस प्रकार डॉ. माहेश्वरी की गणना में यहाँ भी एक भी कमी रह गई है।

डॉ. माहेश्वरी ने 'ऊमरि' प्रसंग के पश्चात् 'कवित्त धड़ाबंध नवेड़ का' प्रसंग होने की बात लिखी है और इसमें 13 कवित्त तथा 7 और छंद होने की बात लिखी है किन्तु प्रकाशित पोथे में यह शीर्षक नहीं है। वास्तव में इस शीर्षक के होने की आवश्यकता भी नहीं है क्योंकि इन कवित्तों में ऊमरि से सम्बन्धित सत्, त्रेता, द्वापर व कलियुग की उम्रों आदि का वर्णन है जो ऊमर प्रसंग की ही विषय वस्तु है। वास्तव में डॉ. माहेश्वरी ने अपनी ओर से ही इस प्रसंग के होने की कल्पना की है, ऐसा लगता है क्योंकि ऊमरि प्रसंग के 15 दोहों के पश्चात् जो कवित्त है उसकी प्रथम पंक्ति 'धड़ा बंध नवेड़ का प्रथम सुन्य कारवे सुन्य' है।

डॉ. माहेश्वरी ने इन साखी व कवित्तों के अंत में व **'एति एक सौ दोय प्रसंग संपूरण समापीत सम्वत् 1838'** (प्रकाशित पोथा पृष्ठ 348) के पूर्व 'सोहलौ' नामक एक पद को भी स्वतंत्र प्रसंग मान लिया है जो कवि की भावना के विरुद्ध है क्योंकि यदि कवि की भावना इसको पृथक् प्रसंग बताने की होती है तो वह इसके पूर्व कोई न कोई शीर्षक लगाकर उसके साथ प्रसंग शब्द भी जोड़ता तथा इसके पश्चात् 102 के स्थान पर 103 प्रसंग लिखता। कवि ने लिखा नहीं है। अत: माना जाना चाहिए कि डॉ. माहेश्वरी के द्वारा मान्य प्रसंग संख्या कवि की भावना के विरुद्ध है।

डॉ. माहेश्वरी ने 'ऊमरि' तथा 'कवित्त धड़ाबंध नवेड़ का' शीर्षकों में कुल 35 छन्द होना लिखा है और प्रकाशित पोथे में भी कुल छंदों की संख्या ऊमरि-प्रसंग में 35 ही है। अत: यहाँ छन्दों की संख्याओं का तो अन्तर नहीं है किन्तु अंगों की संख्या का अंतर है।

कवि ने विष्णुस्तोत्र को भी एक प्रसंग माना है जैसा हमारी गणना से स्पष्ट होता है किन्तु डॉ. माहेश्वरी ने इसको भी स्वतंत्र रचना मान ली है जो कवि की भावना के विरुद्ध है। डॉ. माहेश्वरी का यह लिखना भी कवि भावना के विरुद्ध है कि कवि ने कुल 106 प्रसंग लिखे किन्तु विष्णु-स्तोत्र के स्वतंत्र ग्रंथ होने व 'सोहलौ' की गणना पदों में करने के कारण कुल 104 प्रसंग ही रह जाते हैं।

वास्तव में डॉ. माहेश्वरी ने 'विरह पारख' प्रसंग को 23वें व 24वें क्रमांक पर दो बार लिखा है। अत: एक प्रसंग की संख्या यहाँ बढ़ा दी है।

इसी प्रकार माया के अंग को माया व मान में विभाजित करके एक प्रसंग यहाँ बढ़ा दिया है।

इस प्रकार कवि की भावना के विरुद्ध डॉ. माहेश्वरी ने 4 प्रसंग अतिरिक्त बना दिए हैं। (1) विरह-पारख (2) मान (3) धड़ाबन्ध नवेड़ एवं (4) सोहलौ।

इनको पृथक् प्रसंग न मानने पर, जैसा स्वयं कवि ने नहीं माना है प्रसंगों की संख्या 102 ही रह जाती है जो सही संख्या है। डॉ. माहेश्वरी ने इन 104 प्रसंगों में 866 छन्द माने हैं जबकि प्रकाशित पोथे के 102 प्रसंगों में छन्द संख्या 886 बैठती है। इस कमी-वेशी का काँटा निम्न प्रकार समझा जा सकता है। पोथे की संख्या 886 (-) डॉ. माहेश्वरी की संख्या 866=अंतर 20 छन्द। (शुद्ध अंतर)

	(+)	(-)
डॉ. माहेश्वरी की संख्या	866	
+ प्रेम प्रीति पारख प्रीति सनेह प्रसंग की 1 छन्द संख्या कम	-	1
(-) 79वें प्रसंग में 14 के स्थान पर मानी गई 17 साखियाँ	-	3

+ 87वें प्रसंग में 4 के स्थान पर डॉ. माहेश्वरी ने 3 साखियाँ मानी हैं	1	–
+ 93वें अग्यान प्रसंग में डॉ. माहेश्वरी ने 17 के स्थान पर 16 साखियाँ मानी हैं	1	–
+ पोथे में विष्णु-स्तोत्र के छन्दों को उक्त गणना में शामिल नहीं किया गया है जबकि पोथे में गिने गये हैं।	21	–
+ डॉ. माहेश्वरी ने साधमहिमा प्रसंग (53) में 6 साखी मानी हैं जबकि हमारे पोथे में 7 हैं। अत: 1 की संख्या डॉ. माहेश्वरी की संख्या में जोड़ना होगा		
	890 (-)	4
	शुद्ध संख्या 886 जो हमने पोथे के आधार पर ऊपर लिखी है।	

प्रकाशित पोथे के पृष्ठ 348 पर 'सोहलौ' के पूर्व एक पंक्ति और लिखी हुई है- '**945 एति श्रव गुणी साखी संपूरण**' अर्थात् 945 सर्व गिनी गई साखियाँ संपूर्ण।

कवि ने 945 साखियाँ किस प्रकार गिनीं, समझना मुश्किल है। यदि हम छप्पय छन्द को 1 न मान कर 3 साखी (6 पंक्ति) के बराबर मानें तब भी संख्याओं का मीलान नहीं बैठता। अस्तु!

डॉ. माहेश्वरी ने पदों की संख्या 41 लिखी है जबकि प्रकाशित पोथे में इनकी संख्या 39 ही है। मिलाने पर ज्ञात होता है कि 36 पद तो दोनों प्रतियों में समान हैं। पोथे का 39वाँ पद राग धनाश्री 'जेतसी अरज कही करतारि' डॉ. माहेश्वरी की सूची में नहीं है जबकि प्रकाशित पोथे में निम्न तीन पद नहीं हैं-

37. **ताहरा विड़द विराजै तोनै, आखूं कंवण तुहारी ईढ।** खंभायची 4 दोहे
40. **हरि बिण कूंण निवाजणहार।** धनाश्री 7 दोहे
41. **क्रतब उतरियै पार क्रतब है राजी करतार।** नट 8 दोहे

डॉ. माहेश्वरी ने परमानन्दजी की रचनाओं का विवरण 2 प्रतियों के आधार पर दिया है जबकि श्री कृष्णानन्दजी आचार्य ने भी परमानन्दजी स्वयं के द्वारा लिखित दो पोथों के आधार पर पाठ प्रस्तुत किया गया है।

यह कहना अत्यन्त कठिन है कि जितनी सावधानी से डॉ. माहेश्वरी ने अपने विवरण प्रस्तुत किये हैं, उतनी सावधानी आचार्यजी ने बरती है, किन्तु हमारे सामने पूर्ण सामग्री आचार्यजी की ही है। अत: हम उसके आधार पर ही कुछ कह सकने में समर्थ हैं।

मैंने जितना भी बिश्नोई-वाणी-साहित्य अभी तक पढ़ा है, उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि डॉ. माहेश्वरी के अलावा अन्य साहित्य पाठालोचन विज्ञानानुसार सम्पादित होकर प्रकाशित नहीं हो सका है।

डॉ. माहेश्वरी ने सबदवाणी का सम्पादन अवश्य श्रेष्ठतम किया है। यदि कोई, ऐसा सुन्दर व श्रेष्ठ सम्पादन कर रचनाओं को प्रकाशित कराए तो हिन्दी-साहित्य का महान उपकार हो तथा बिश्नोई रचनाकार भी हिन्दी साहित्य के अमर नक्षत्रों में परिगणित होने लगें।

मेरा बिश्नोई-साहित्य अकादमी से अनुरोध है कि वह सुधि विद्वानों की विद्वता का लाभ उठाकर ग्रंथों का प्रकाशन कराए ताकि आगे आने वाली पीढ़ियाँ इन ग्रंथों को आसानी से पढ़ व समझ सकें। अस्तु!

डॉ. माहेश्वरी ने क्रमांक 3 पर 5 साखियाँ, क्रमांक 5 पर फुटकर कवित्त 2, दोहे 12 व क्रमांक 7 पर छमछरी (संवत्सरी) नामक और रचनाओं की सूचना दी है किन्तु प्रकाशित पोथे में ये नहीं हैं।

साथ ही क्रमांक 4 पर विसन-असतोत्र 22 छंद व क्रमांक 6 पर गद्य में साका नामक रचनाओं का उल्लेख किया है। ये दोनों रचनाएं प्रकाशित पोथे में हैं।

-ब्रजेन्द्रकुमार सिंहल
संपादक श्रीरामस्नेही-संदेश
60/60, रजतपथ, मानसरोवर, जयपुर-302020
मो.: 9351503555, email: bks@mactool.com

गँवार सभा

रात की ओट लिए
कोई है ....
कभी ओकड़ू लगता है
कभी सीधा तना....
बहते काले पानी की आवाज
कुछ और गहरा देती है
इस रहस्य को....
ओह! कुछ और परछाइयाँ
उग आईं....
कनपटी से पसीना बहने लगता है
साँसों को हथेली में लेकर....
अंधाधुंध भागता हूँ!
दूब मजाक कर देती है
काली चादर में भीग जाता हूँ
सामने से कंधे पर पावड़ा लिए
चिंगारी से पहचान बताती
एक कहानी आकर.....
खड़ी हो जाती है!
लाखों किस्सों को हिस्सों में समेटे
जिसकी ताउम्र!
सोये आसमान के नीचे गुजरती है
और गँवार सभा
चाय की स्लेट पर
उसकी समीक्षा करती है!
और वह इस सारे सांग को
चप्पल के नीचे मसल कर
बुझा देती है...

-शर्मिला
शोधार्थी, पंजाब विश्वविद्यालय,
चण्डीगढ़

शराब कितनी खराब

1. देखो शराब कितनी खराब ?
इन्सान को रूला रही
भरी जवानी में बला यह
मौत को बुला रही।
2. पीने से माथा फिर चुका
अच्छे खासे इन्सान का
अब उसे अपमान की
थोड़ी भी चिंता नहीं रही।
3. उजड़ चुका उसका घर
पर शराबी बेखबर
जीते जी इन्सान को
यूं लाश सम बना रही।
4. खुद को भूलाने की जुगत में
अपना फर्ज भूला डाला
भटके जन ने मदीरा पीकर
खुद जीवन नरक बना डाला।
5. कमाने की सुध ना बची
उम्मीद की किरणे बुझा
लूटा अपने स्वाभिमान को
वह आकृति घर आ रही।
6. घर नार देखे द्वार पे
लड़खड़ा गिर पड़ा शोहर
भद्दी सी गाली बक रहा
मुँह से बदबू आ रही।
7. लाले पड़ गए खाने के
गुम हो गए होश कमाने के
तब देख दारूण दुर्दशा
भाया आँसू बहा रही।
8. कुल की मर्यादा टूट चुकी
तो धेला नहीं कमायेगा
हाथ लगी हर चीज बेचकर
सीधा ठेके जायेगा।
9. मिटा के अपने मान को
संसार के सम्मान को
इक सच्चे इन्सान को
मदिरा यूं पतित बना रही।
10. पीने की जुगत में इस कदर
बिखरा आदर्शों में इस कदर
भग्न खंडहर से बर्बादी की
यह गाथा दिल दुखा रही।

-रामकिशन डेलू
कृषि उपज मण्डी के पास, जेल रोड,
नोखा, जिला बीकानेर (राज.) मो.:
9414547458

सूचना

फाल्गुन मेला की व्यवस्था हेतु दिनांक 6 मार्च, 2016 रविवार को अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा की प्रबंधकारिणी की बैठक सुबह 11 बजे होगी व आम साधारण सभा की बैठक उसी दिन 2 बजे मुक्तिधाम मुकाम में रखी गई है। अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा की प्रबंधकारिणी के निर्णय अनुसार महासभा ने एक ऑडिट कमेटी का गठन किया है। इस कमेटी में (1) श्री मांगीलाल बिश्नोई सी.ए., सांचौर हाल मुंबई; (2) श्री कुलदीप बिश्नोई सी.ए., दिल्ली हाल गुड़गांव; (3) श्री सुनील बेनीवाल सी.ए., श्री गंगानगर; (4) श्री करण बिश्नोई सी.ए., चण्डीगढ़; (5) श्री संतोष बिश्नोई सी.ए., मध्यप्रदेश हाल, मुम्बई को शामिल किया है। ऑडिट टीम वर्ष 2005 से 2015 तक अखिल भारतीय महासभा, श्री जगदगुरु जम्भेश्वर गोशाला संस्था, श्री अखिल भारतीय जम्भेश्वर सेवकदल -तीनों सस्थाओं की पूर्व की ऑडिट के रिकॉर्ड का निरीक्षण करेगी। दिनांक 8 मार्च 2016 की सुबह हवन यज्ञ व 1 बजे से बिश्नोई समाज का खुला अधिवेशन होगा। उसी दिन अमावस्या की रात्रि को सत्संग, जागरण समाज के विद्वान साधु-सन्तों व गायनाचार्यों द्वारा दिया जाएगा।

-विनोद धारणियां
महासचिव, अ.भा.बि. महासभा, मुक्तिधाम मुकाम, नोखा, बीकानेर

जाम्भाणी परम्परा में नारी का स्थान, महत्व और योगदान

कई अन्य धर्मों सम्प्रदायों में स्त्री को दोयम दर्जे का समझा जाता है, उन्हें कई धार्मिक कार्यों में भाग लेने का बराबर का अधिकार नहीं होता है। लेकिन गुरु जाम्भोजी ने स्त्री को बराबर का हक दिया। योगी बाला लक्षमणनाथ के एक दूत योगी ने अपने गुरु की बड़ाई करते हुए जाम्भोजी से कहा कि हमारे गुरु का तो योग अपार है, वो तो स्त्री का मुख भी नहीं देखते और इसे विषयों का कारण मानते हैं। तब गुरु जाम्भोजी ने उस योगी को सबद 50 सुनाया।

'तइयाँ सांसु तइयाँ मांसु। तइयां देह दमोइ।
उत्तम मध्यम क्यों जाणिजे। बिबरस देखो लोई'

पुरुष और स्त्री में वही साँस है, वही मांस है। वही (पाँच तत्व की) देह है, वही प्राण है। (परमात्मा आत्मा के रूप में स्त्री पुरुष में सामान रूप में व्याप्त है।) फिर किसी को उत्तम मध्यम नीच क्यों समझते हो? हे लोगो यह भेद दृष्टि क्यों रखते हो? (जब तक योगी संत के मन में स्त्री-पुरुष का भेदभाव दिमाग में रहेगा तब तक वह सच्चा योगी नहीं हो सकता। स्त्री पुरुष दोनों ही उस परत्मात्मा की आराधना करने के और उसे पाने के सामान अधिकारी हैं।)

'जांके वाद विराम विरांसो सांसा सरसा भोलो चाले
ताहंके भीतर छोत लकोई'

जो वाद विवाद में उलझा हुआ है, जिसकी शांति नष्ट हो गयी है, जो संशय में पड़ा हुआ है और भूल में ही चल रहा है, उसी के ही हृदय में यह छोत (भींट/ऊंच नीच का भेद) छुपी हुई है।

'जांके वाद विराम विरांसो सांसो सरसो भोलो भागेय
ताहंके मुले छोत न होई'

जिनके वाद-विवाद की प्रवृत्ति, अशांति, संशय, भ्रम रूपी भूल दूर हो गयी है, उनके हृदय में यह छोत (ऊंच नीच की भेद दृष्टि) नहीं हो सकती। सबद 60 में 'एक दु:ख बूढ़े घर तरणी अइयो, एक दु:ख बालक की माँ मुइयो' कहकर अनमेल विवाह के दु:ख को प्रकट किया वहीं बिना माता के बालक की व्यथा बताकर मातृशक्ति की महता को बताया।

गुरु जाम्भोजी ने बहुत से सबदों में मातृशक्ति की बड़ाई की है। उदाहरण देकर, विशेषता बताकर और नाम लेकर जैसे कि देवकी, तारादेवी, कुंती, सीता, रुक्मणी, द्रोपदी इत्यादि। सबद 85 में **'माय जाने मेरे बहुटल आवे, बाजे बिरध बधाई'** कहकर सास का अपनी बहु के प्रति प्रेम ही प्रकट किया है।

'सोक दुहागण तेपण पूछे, किसी परापति हमारी। बाँझ तिरिया बहुतेरी पूछे ले ले हाथ सुपारी' से स्त्रियों की व्यथा, दु:ख प्रकट होता है और गुरु जाम्भोजी के पास जाकर अपने दु:खों को दूर करने की प्रार्थना प्रकट होती है। इससे गुरु जाम्भोजी की स्त्रियों के प्रति सहानुभूति और सहायता सिद्ध होती है।

सबद 61 में **'के तें हरी पराई नारी। के तें तिरिया सिरि खड़ग उभारया'** कहकर गुरु जाम्भोजी स्त्रियों के प्रति हो रहे अत्याचारों को गलत/पाप ठहराते हैं।

सबद 105 में **'माय न बाप न। बहन न भाई। पूत धियों, पुरुष त्रियों'** कहकर गुरु जाम्भोजी पुरुष के सामान ही महत्व स्त्री को देते हैं। गुरु जाम्भोजी ने मोक्ष प्राप्ति में सहायक और नित्य जपने वाला महत्वपूर्ण नवण (संध्या) मन्त्र अपनी बुआ तांतु को बताकर सिद्ध किया कि स्त्रियां भी मोक्ष की अधिकारी हैं और वो भी मोक्ष प्राप्त कर सकती हैं।

गुरु जाम्भोजी ने सबद 20, 27, धर्म नियम इत्यादि में पुरुष और स्त्री दोनों को ही शीलवान (पत्निव्रता/ पतिव्रता) की शिक्षा दी है। गुरु जाम्भोजी ने गरीब भक्त उमा बाई (नोरंगी) की मुसीबत के समय भात भरकर सहायता की। इससे बढ़िया और क्या उदाहरण होगा उनके स्त्रियों के प्रति समभाव/स्नेह/सहानुभूति और बराबर के हक का।

गुरु जाम्भोजी की शिक्षाओं और जाम्भाणी परम्परा का ही प्रभाव है कि बिश्नोई समाज में स्त्रियों को भी धार्मिक, सामाजिक,पारिवारिक धरातल पर पुरुषों के सामान बराबर का अधिकार है। यही कारण है कि बिश्नोई समाज में स्त्रियां हर क्षेत्र में पुरुषों के बराबर कन्धा से कन्धा मिलाकर खड़ी हैं, प्रगती कर रही हैं। बिश्नोई स्त्रियों (अमृता, इमरती, भागु, दामी, चीमा, कर्मा, गौरां इत्यादि) ने जीव रक्षा और वन रक्षा और धर्म निर्वाह के लिए अपने प्राणों की आहुति देकर गौरवशाली इतिहास रच दिया है जो पूरे विश्व के लिए प्रेरणा स्रोत है। बिश्नोई समाज में विधवा विवाह मान्य है। बाल विवाह अच्छा नहीं माना जाता। वृद्ध माताओं को वृद्धाश्रम का मुंह नहीं देखना पड़ता। अधिकतर संयुक्त परिवार हैं। फिर भी अगर अज्ञानतावश कहीं भी उनके अधिकारों का हनन हो रहा हो तो बिश्नोई स्त्रियां अपनी आवाज उठा सकती हैं। गुरु जाम्भोजी की शिक्षाएं और जाम्भाणी परम्परा और अधिकतर समाज उनके साथ है।

बधाई सन्देश

डॉ. लिज्जाराम बिश्नोई IPS निवासी गांव चिंदड़, जिला फतेहाबाद की पदोन्नति अति. पुलिस महानिदेशक (ADGP), असम के पद पर हुई है।

श्री आत्माराम बेनीवाल पुत्र श्री रामप्रताप गाँव बुर्जभंगू, जिला सिरसा जो खाद्य एवं आपूर्ति विभाग, हिसार में बतौर सुपरिन्टेंडेंट कार्यरत थे, की पदोन्नति जिला खाद्य एवं आपूर्ति नियंत्रक (DFSC) पद पर हुई है।

नियोफी बिश्नोई सुपुत्री लालचंद बिश्नोई, निवासी 6ई18, पवनपुरी, बीकानेर जो बिट्स, पिलानी की बी.ई. अंतिम वर्ष की छात्रा है, का Myntra, Bangalore में सॉफ्टवेयर इंजीनियर के पद पर चयन हुआ है।

राहुल बिश्नोई सुपुत्र रामजीलाल ढुकिया निवासी गांव अलालवास, फतेहाबाद का चयन भारतीय सेना में लेफ्टीनेंट (Engg. Branch) के पद पर हुआ। आपने अब तक विभिन्न दौड़ स्पर्धाओं में 15 स्वर्ण पदक भी प्राप्त किए हैं।

श्रीचंद खीचड़ पुत्र श्री ओमप्रकाश खीचड़, निवासी गांव बंधाला, तह. नोखा, जिला बीकानेर ने हाल ही में आयोजित All India Police Archery Championship 2015-16 (Dimapur) में दो रजत पदक प्राप्त किए।

खुशबू सुपुत्री श्री विजयपाल कड़वासरा निवासी चौधरीवाली, जिला हिसार ने सी. एस. फाऊंडेशन की परीक्षा में राष्ट्रीय स्तर पर 22वां रैंक प्राप्त किया है।

डॉ. हेतराम डुडी, (वरि. वैज्ञानिक, से.नि. एच.ए.यू.) गांव असरावां, हिसार ने 25वीं हरियाणा मास्टर खेलकूद प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त किया है तथा आपका नेशनल प्रतियोगिता के लिए चयन हुआ है।

चंद्रभान बिश्नोई सुपुत्र श्री किशोरीलाल बिश्नोई निवासी एकलखोरी, जोधपुर (राज.) ने जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर की स्नातकोत्तर इतिहास की परीक्षा में स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

मनोहर बिश्नोई निवासी खाजूवाला, जिला बीकानेर (राज.) ने गुवाहाटी में आयोजित बारहवें दक्षिण एशिया खेल में 80 किमी. रोड रेस साइकलिंग प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

डॉ. अनामिका बिश्नोई पत्नी डॉ. सुरेंद्र बिश्नोई निवासी रोहतक ने दिल्ली में आयोजित सौंदर्य प्रतियोगिता "Mrs. India Qeen of Substance 2016" में देश-विदेश की 40 प्रतिभागियों को पछाड़ कर 2nd Runner-up का खिताब हासिल किया।

गौरिका सुपुत्री श्री ललित कुमार व श्रीमती पूनम बिश्नोई, निवासी 98पी, सेक्टर 45, गुड़गांव को गोल्फ में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए 26 जनवरी, 2016 को हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहरलाल खट्टर द्वारा सम्मानित किया गया। गौरिका All India Amateur Golf Championship 2015 की विजेता रही और 5 बार एशियन इवेंट्स में भारत का प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं। दो बार Northern India Amateur Golf Championship की विजेता भी रह चुकी हैं।

आपकी इस सफलता पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार एवं बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से बहुत बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की ढेरों शुभकामनाएं।

ऊधोजी कृत हरजस (राग गवड़ी)

गिरधर गाइयै जी, पाइयै सुरां संगति पार।
अठ्रण ओळगीयै इया, पर पकीर्य उरवार॥1॥
इकवीस लाख असध अरीयण, बंधीयै किण्य बंध्य।
चित चंचळ नाव निहचळ, जुग पुन्य संध्य॥2॥
कली काल का दम हरिजण, चालवे जुग चज।
सींच लाख तं सुख सुक्रत, पाप नै उसरज॥3॥
जींह देस विच न जुरा, चिंता सदा रूप र रग।
तेतीस त्रिभुवण साध सोहै, सदा सीतल संग॥4॥
देस सधर साध अमर, रतन जोति अवास।
उडि चलो हंसा तजो ससा, संपजैं सदा सुख वास॥5॥
पीव परस उधो अमर, मिलण मीत मुरारि।
दस च्यारि तज्य पिछाण्य प्रीतम, पीव पार उतारि॥6॥

1. श्री कृष्ण भगवान के गुणगान करो, जिससे देवताओं की सत्संग मिलेगी। आठो पहर उनके पास रहो। उन पर अपने हृदय को न्यौछावर करो।

2. इक्कीस लाख असुर शत्रुओं का उन्होंने वध किया। उनके नाम का स्मरण चंचल मन को निश्चित करके करो। संसार में इस पुण्य की साधना करो।

3. कलयुग का संकट हरि स्मरण से दूर होता है। इसलिए अच्छे कार्यों का संचय करो और पाप का त्याग करो।

4. जहां मृत्यु तथा वृद्धावस्था की चिंता नहीं है, हमेशा उस रूप में रचो। जहां तेतीस कोटि साधु जन और तीन लोक के स्वामी विराजमान हैं, वहां हमेशा सुख शान्ति है।

5. वहां धैर्य, अमरता और ब्रह्म की ज्योति है। हे आत्मा, संशय को त्याग कर उड़ चलो और उस सुख निवास में पहुंचो।

6. कवि ऊधो जी कहते हैं- दस इन्द्रियों और चार विकारों को त्याग कर, प्रियतम को पहचानो। वही भवसागर से पार उतारेगा। उस स्वामी से स्पर्श करके

ऊधोजी कृत हरजस (राग काफी)

घर आवोजी मिठ बोला, प्यारी तमारी बातियां।टेक।
कागद लाऊं कलम वणाऊं, लिखूं ज प्रेम की पातियां॥2॥
हंस-हंस बोलो अंतर खोलो, मेटो जी मन की घातियां॥3॥
अंक भर भेंटो अंतर मेटो सीतळ करो मेरी छातियां॥4॥
पांव पलोटूं पखा जी ढोलूं, टहळ कयं दिन रातियां॥5॥
कहै ऊधवदासा एही नित आसा, सदा राहो संग साथियां॥6॥

1. हे मधुर बोलने वाले घर आओ, आपकी बातें बहुत प्यारी हैं।

2. मैं कागज लेकर आता हूं, कलम बनाता हूं, मैं प्रेम-पत्र लिखूंगा।

3. आप हंसकर बोलेंगे तो मेरे मन के भेद मिट जाएंगे।

4. आप मेरे को गोद में समेट कर भेद को समाप्त करो, इससे मेरा कलेजा ठण्डा होगा।

5. मैं आपके पांव दबाऊंगा, पंखा से हवा करूंगा और रात-दिन आपकी सेवा करूंगा। (कवि यह हरजस राधा की ओर कल्पना करके कहते हैं।)

6. कवि ऊधवदास जी को यही आशा है कि हे स्वामी आप हमेशा अपने प्रियजनों के साथ रहें।

बिश्नोई लोकगीत

गुगरी

सोनै रूपैगा चरू रे चढ़ाय, पीतल कै री टोकणी, जी म्हारा राज।
कणक कै री गुगरी रन्धाय, मांय चीणा रा टोटळा, जी म्हारा राज।
बांस कै री ओडी गुंथाय, ऊपर डोवटी कै रो नातणों, जी म्हारा राज।
नाई कै नै ऊरै बुलाय, सहर बण्टावो गुगरी, जी म्हारा राज।
बांटी नाई कै उरलै-परलै बास, बाई घर ढाळ्यो छाबड़ो, जी म्हारा राज।
सूती जच्चा राणी खुंटी खांच बाळकियौ न बोबो ना देवै, जी म्हारा राज।
नाई कै नै ऊरै बुलाय, किस बिध बांटी मेरी गुगरी, जी म्हारा राज?
बांटी जच्चा उरलै-परलै बास, बाई घर ढाळ्यो छाबड़ो, जी म्हारा राज।
नाई कै का बैटा पाछी लाय गुगरी, बेनड़ घर क्यूं ढाळ्यो छाबड़ो, जी म्हारा राज?
चढ़ियो ढोलो ढ़लती सी रात, बेनड़ घर सूरज ऊग्यो, जी म्हारा राज।
बा बाई निरधनिया गी धीव, उल्टी मंगायी गुगरी, जी म्हारा राज।
होलै बीरा, धीमो-धीमो बोल, देराणी-जेठाणी सुणसी, जी म्हारा राज।
तूं ए बीरा पाछो चाल, म्हे आपे ल्यावां गुगरी, जी म्हारा राज।
बाई म्हारी ढोला गै ढ़मकै मोतीड़ा गी लयाई गुगरी, जी म्हारा राज।
तूं ए भावज बाहर आय मोतीड़ा गी बांटू गुगरी, जी म्हारा राज।
हूं सूं धनोती गी धी, मोतीड़ा गी बांटू गुगरी, जी म्हारा राज।
तूं ए भावज निरधनियां गी धी उल्टी मांगै गुगरी, जी म्हारा राज।
दु:खै नणद मेरी डावड़ली आंख, सहर सहरावै तेरी गुगरी, जी म्हारा राज।

पोमचो

डयोड्या में बैठ्या बापजी बोल्या, दे द्यो बहू सा पोमचो।
बाई आई धीनड़िया गै कोड। हट मांड्यो नणद बाई पोमचो।
ना द्यूं जामी पोमचो, लायो मेरो जामण जायो बीर।
हट मांड्यो नणद बाई पोमचो॥

धइड़ो घमोड़ती माताजी बोली, दे द्यो बहू सा पोमचो।
बाई आई धीनड़िया गै कोड। हट मांड्यो नणद बाई पोमचो॥
ना द्यूं सासु पोमचो, लायो मेरो जामण जायो बीर।
हट मांड्यो नणद बाई पोमचो॥

महला में बैठ्यो बीरोजी बोल्या, दे द्यो बहू सा पोमचो।
बाई आई धीनड़िया गै कोड। हट मांड्यो नणद बाई पोमचो।
ना द्यूं जेठ जी पोमचो, लायो मेरो जामण जायो बीर।
हट मांड्यो नणद बाई पोमचो॥

रसोई में बैठ्या जेठाणी जी बोली, थे तो ना द्यो देराणी सा पोमचो।
मत काढ़ो देराणी नूंई-नूंई रीत, हट मांड्यो नणद बाई पोमचो।
बोल्यो बीरो जी गौरी नै, दे द्यो गौरी पोमचो।
बाई आई धीनड़िया गै कोड। हट मांड्यो नणद बाई पोमचो।
और मुलाऊं पोमचो, कोई लाल लगाऊं लख चार।
हट मांड्यो नणद बाई पोमचो॥

आल्यो नणद बाई पोमचो, भळै मत आई म्हारै बार।
हट मांड्यो नणद बाई पोमचो॥

ना मुलायो बीरै पोमचो, खूंटो रोप्यो केर गो।
कोई बांन्धया बीरै गा हाथ। हट मांड्यो नणद बाई पोमचो।
ओल्यो भवज थारो पोमचो, छोड़ो बीरै गा हाथ।
हट मांड्यो नणद बाई पोमचो॥

साभार- बिश्नोई लोकगीत

वैदिक चिंतन में पर्यावरण

पर्यावरण और जीवन का संबंध सदियों पुराना है। समस्त जीव एवं वनस्पति जगत और मनुष्य के जीवन के परस्पर सामंजस्य का प्राचीन भारत के ऋषि तपोवन में अद्‌भुत परिचय मिलता है। भारत के ऋषि-मुनियों द्वारा विरचित वेदों, पुराणों, उपनिषदों तथा अनेक धार्मिक ग्रंथों में पर्यावरण का चित्रण हमें प्राप्त होता है। प्रत्येक प्राणी अपने चारों ओर के वातावरण अर्थात् बाह्य जगत पर आश्रित रहता है, जिसे सामान्य भाषा में पर्यावरण कहा जाता है। पर्यावरण दो शब्दों से मिलकर बना है- 'परि' तथा 'आवरण'। 'परि' का अर्थ है- चारों ओर तथा 'आवरण' का अर्थ है 'ढका हुआ' अर्थात् किसी भी वस्तु या प्राणी को जो भी वस्तु चारों ओर से ढके हुए है वह उसका पर्यावरण कहलाता है।

सभी जीवित प्राणी अपने पर्यावरण से निरंतर प्रभावित होते हैं तथा वह उसे स्वयं प्रभावित करते हैं। संपूर्ण जैव मंडल को सुरक्षा कवच देने वाले दो तत्व हैं- 'प्राकृतिक तत्व-वायु, जल, वर्षा, भूमि, नदी, पर्वत आदि एवं मानवीय तत्व-अप्राप्त की प्राप्ति में प्रकृति से प्राप्त संरक्षण। पर्यावरण के संरक्षण के लिए प्रकृति से प्राप्त कर संरक्षण। पर्यावरण के संरक्षण के लिए प्रकृति तथा मानव प्रकृति में उचित सामंजस्य की आवश्यकता है। वेदों में इन दोनों तत्वों का वर्णन उपलब्ध है।

ॐ पूर्णमिदः पूर्णामिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

अर्थात् हम प्रकृति से उतना ग्रहण करें जितना हमारे लिए आवश्यक हो तथा प्रकृति की पूर्णता को क्षति न पहुंचे। परिवारों में मां-दादियां इसी भाव से तुलसी की पत्तियां तोड़ती हैं। वेद में एक ऐसी ही प्रार्थना की गई है -

'यत्ते भूमे विखनामि क्षिप्रं तदपि रोहतु।
मां ते मर्म विमृग्वरी या ते हृदयमर्पितम्॥

अर्थात् हे भूमि माता! मैं जो तुम्हें हानि पहुंचाता हूं, शीघ्र ही उसकी क्षतिपूर्ति हो जावे। हम अत्यधिक गहराई तक खोदने में (स्वर्ण-कोयला आदि) में सावधानी रखें। उसे व्यर्थ खोदकर उसकी शक्ति को नष्ट न करें।

पर्यावरण और जीवन का एक-दूसरे से घनिष्ठ संबंध है कि पर्यावरण के बिना जीवन नहीं हो सकता और जीवन के बिना पर्यावरण नहीं हो सकता।

भारतीयता का अर्थ ही है- हरी-भरी वसुंधरा और उसमें लहलहाते फूल, गरजते बादल, नाचते मोर और कल-कल बहती नदियां। यहां तक कि भारतीय संस्कृति में वृक्षों और लताओं का देव-तुल्य माना गया है। जहां अनादिकाल से इस प्रार्थना की गूंज होती रही है- 'हे पृथ्वी माता तुम्हारे वन हमें आनंद और उत्साह से भर दें।' पेड़-पौधों को सजीव और जीवंत मानने का प्रमाण भारतीय वाङ्मय में विद्यमान है।

वेदों में पर्यावरण को अनेक तरह से बताया गया है, जैसे- जल, वायु, ध्वनि, वर्षा, खाद्य, मिट्टी, वनस्पति, वनसंपदा, पशु-पक्षी आदि। जीवित प्राणी के लिए वायु अत्यंत आवश्यक है। प्राणी जगत के लिए संपूर्ण पृथ्वी के चारों ओर वायु का सागर फैला हुआ है।

ऋग्वेद में वायु के गुण बताते हुए कहा गया है- '**वात आ वातु भेषजं मयोभु नो हृदे, प्रण आयूंषि तारिषत**' अर्थात् शुद्ध ताजा वायु अमूल्य औषधि है, जो हमारे हृदय के लिए दवा के समान उपयोगी है, आनंददायक है। वह उसे प्राप्त करता है और हमारी आयु को बढ़ाता है।'

ऋग्वेद में यही बताया गया है- कि शुद्ध वायु कितनी अमूल्य है तथा जीवित प्राणी के रोगों के लिए औषधि का काम करती है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए आयुवर्धक वायु मिलना आवश्यक है और वायु हमारा पालक पिता है, भरणकर्ता भाई है और वह हमारा सखा है। वह हमें जीवन जीने के योग्य करें। शुद्ध वायु मनुष्य का पालन करने वाला सखा व जीवनदाता है।

वृक्षों से ही हमें खाद्य सामग्री प्राप्त होती है, जैसे फल, सब्जियां, अन्न तथा इसके अलावा औषधियां भी प्राप्त होती हैं और यह सब सामग्री पृथ्वी पर ही हमें प्राप्त होती हैं।

अथर्ववेद में कहा है- 'भोजन और स्वास्थ्य देने वाली सभी वनस्पतियां इस भूमि पर ही उत्पन्न होती हैं। पृथ्वी सभी वनस्पतियों की माता और मेघ पिता हैं, क्योंकि वर्षा के रूप में पानी बहाकर यह पृथ्वी में गर्भाधान करता है। वेदों में इसी तरह पर्यावरण का स्वरूप तथा स्थिति बताई गई है और यह भी बताया गया है कि प्रकृति और पुरुष का संबंध एक-दूसरे पर आधारित होता है।

आरोग्यता बढ़ाने में सहायक 'स्नान'

स्नान के प्रकार : स्नान के पाँच प्रकार होते हैं-

1. **ब्रह्म स्नान:** ब्रह्म-परमात्मा का चिंतन करके, 'जल ब्रह्म, नहाने वाला ब्रह्म' ऐसा चिंतन करके ब्राह्ममुहूर्त में नहाना, इसे ब्रह्म स्नान करते हैं।
2. **ऋषि स्नान:** ब्राह्ममुहूर्त में आकाश में तारे दिखते हों और नहा लें, यह ऋषि स्नान है। इसे करने वाले की बुद्धि बड़ी तेजस्वी होती है।
3. **देव स्नान:** देव-नदियों में नहाना या देव-नदियों का स्मरण करके सूर्योदय से पूर्व नहाना, यह देव स्नान है।
4. **मानव स्नान:** सूर्योदय के थोड़े समय पूर्व का स्नान मानव स्नान है।
5. **दानव स्नान:** सूर्योदय के पश्चात् चाय पीकर, नाश्ता करके 8 से 12-1 बजे के बीद नहाना, यह दानव स्नान है।

हमेशा ब्रह्म स्नान, ऋषि स्नान करने का ही प्रयास करना चाहिए।

किस प्रकार स्नान करें तो घर में भी तीर्थ स्नान माना जाएगा?

इनके अलावा अन्य 6 प्रकार के स्नानों का भी उल्लेख शास्त्रों में है। उनकी भी महत्ता बापूजी ने बतायी है:

1. **मंत्र स्नान:** गुरुमंत्र जपते हुए अपने को शुद्ध बना लिया।
2. **भौम स्नान:** शरीर को पवित्र मिट्टी स्पर्श कराके शुद्धि मान ली।
3. **अग्नि स्नान:** मंत्र जपते हुए सारे शरीर लगा ली। वह भी पवित्र बना देती है। गाये के पैरों की धूलि से ललाट पर तिलक करके काम-धंधे पर जाय तो सफलता मिलती है अथवा कोई काम अटका है तो वह अटक-भटक निकल जाती है।
4. **दिव्य स्नान:** सूरज निकला हो और बरसात हो रही हो, उस समय सूर्य-किरणों में बरसात की बूंदों से स्नान।
5. **वारुण स्नान:** जल में डुबती लगाकर नहाना। इसको वारूण स्नान बोलते हैं। घर में वारूण स्नान माने पानी से स्नान करना।
6. **मानसिक स्नान:** मैं आत्मा हूँ, चैतन्य हूँ, ॐॐॐ... पंचभौतिक शरीर में नहीं हूँ। बदलने वाले मन को मैं जानता हूँ। बुद्धि के निर्णय बदलते हैं, भाव भी बदलते हैं, ये सब बदलने वाले हैं, उनको जाननेवाला मैं अबदल आत्मा हूँ। ॐॐ परमात्मने नम: ॐ ॐ... । इस प्रकार आत्मचिंतन करने को बोलते हैं मानसिक स्नान।

स्नान को परमात्मा-स्नान बनाने की कला

शास्त्रों के अनुसार **"ॐ ह्रीं गंगायै ॐ ह्रीं स्वाहा।"** यह मंत्र बोलते हुए सिर पर जल डालें तो गंगा स्नान का पुण्य होता है। अगर प्रार्थना करते हुए स्नान करते हो तो वह आपका परमात्म स्नान हो जायेगा, 'अंतर्यामी ईश्वर को मैं स्नान करना रहा हूँ। शरीर को तो स्नान कराता हूँ लेकिन अंतरतम चैतन्य प्रभु! मैं मुझे भी नहला रहा हूँ।

ॐ भूधराय नम:। 'जो पृथ्वी को धारिणी शक्ति से धर रहे हैं और हमारे शरीर को धारण करने की शक्ति दे रहे हैं, उनको हम नमन करते हैं। 'इस मंत्र से आप स्नान करिये। स्वास्थ्य और मन की प्रसन्नता का लाभ होगा। नाम तो भगवान को होगा और काम तुम्हारे तन-मन का और तुम्हारा होगा। अगर कोई अधिक विशेष मंत्र चाहते हो तो यह मंत्र बोलते हुए स्नान करो।

यथा विशोकां धरणे कृतवांस्त्वां जनार्दन:।

तथा मां सर्वशोकेभ्यो मोचयाशेषधारिणि॥

'अखिल लोक धारण करने वाली देवी! जिस प्रकार भगवान जनार्दन ने तुम्हें शोकरहित किया है, मुझे भी उसी भाँति समस्त शोकों से रहित करो।' (भविष्य पुराण, उत्तर पर्व : अध्याय 105)

स्नान का सही तरीका सिखाया

शरीर की मजबूरी और आरोग्यता के लिए रगड़-रगड़कर स्नान करना चाहिए। गर्मियों में दो बार नहाना स्वास्थ्यप्रद है।

स्नान करते समय पैरों में विद्युत-कुचालक (रबड़ आदि की) चप्पल होनी चाहिए। ताजा पानी बाल्टी में भर लें। उसमें सप्त नदियों का आवाहन करें:

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

सिर को बाल्टी में डालें और उसमें पलकें झपकायें। इससे आँखों की शक्ति बढ़ती है तथा गर्मी निकल जाती है। पहले सिर पर पानी डालना चाहिए ताकि गर्मी सिर से नीचे चली जाए। पैरों पर पहले ठंडा पानी नहीं डालना चाहिए। पहले पैर गीले करने से शरीर की गर्मी ऊपर की ओर चढ़ती है, जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

जहां जलाशय है वहां पूर्वमुखी होकर स्नान करें और घर में करें तो बाल्टी के पानी में कभी-कभार गोमूत्र (गोझरण) अथवा पीर्थोदय (तीर्थ का जल) पहले डाल के फिर स्नान करें तो घर में भी तीर्थ स्नान माना जायेगा। स्नान करते समय सिर पर जल डालते हुए 3 बार महामृत्युंजय मंत्र बोलने से आरोग्यता बढ़मी है तथा अकाल मृत्यु टलती है।

स्नान किससे करें?

आज विज्ञापनों की चकाचौंध में लोग प्राकृतिक वस्तुओं के उपयोग से दूर होते जा रहे हैं। केमिकलयुक्त साबुन, शैम्पू आदि का उपयोग करने से लोग स्वास्थ्य की हानि कर लेते हैं। सभी के तन-मन व मति स्वस्थ रहे इसलिए बापूजी ने हानिकारक केमिकलों से बने साबुन, शैम्पू की हानियाँ बताकर लोगों को प्रकृतिप्रदत्त वस्तुओं के विभिन्न लाभकारी प्रयोगों से अवगत कराया। पूज्यश्री कहते है: "(प्राय:) साबुन में तो चरबी, सोडा, खार एवं ऐसे रसायनों का मिश्रण होता है, जो हानिकारक होते हैं। शैम्पू से बाल धोना ज्ञानतंतुओं और बालों की जड़ों का सत्यानाश करना है। साबुन और शैम्पू नुकसान करते हैं। जो लोग इनसे नहाते हैं, वे अपने दिमाग के साथ अन्याय करते हैं। इनसे मैल तो निकलता है लेकिन इनमें प्रयुक्त रसायनों से बहुत हानि होती है। तो किससे नहायें, यह भी शास्त्रकारों ने, आचार्यों ने खोज निकाला। मुलतानी मिट्टी से स्नान करने पर रोम कूप खुल जाते हैं। इससे रगड़कर स्नान करने पर जो लाभ होते हैं, साबुन से उसके एक प्रतिशत भी लाभ नहीं होता। स्फूर्ति और निरोगता चाहने वालों को साबुन से बचकर मुलतानी मिट्टी से नहाना चाहिए। जिसको भी गर्मी हो, पित्त हो, आँखों में जलन होती हो वह मुलतानी मिट्टी लगा के थोड़ी देर बैठ जाय, फिर नहाये तो शरीर की गर्मी निकल जायेगी, फायदा होगा। मुलतानी मिट्टी और आलू का रस मिलाकर चेहरे पर लगाओ, चेहरे पर सौंदर्य और निखार आयेगा।

जापानी लोग हमारी वैदिक पौराणिक विद्या का लाभ उठा रहे हैं। शरीर में उपस्थित व्यर्थ की गर्मी तथा पित्तदोष का शमन करने के लिए, चमड़ी एवं रक्त संबंधी बीमारियों को ठीक करने के लिए वे लोग मुलतानी मिट्टी के घोल से 'टब-बाथ' करते हैं तथा आधे घंटे के बाद शरीर को रगड़कर नहा लेते हैं। आप भी यह प्रयोग करके या मुलतानी मिट्टी को ऐसे ही शरीर पर लगा के स्नान करके स्फूर्ति और स्वास्थ्य का लाभ ले सकते हैं।" मुलतानी मिट्टी शीतल होती है, अत: शीत ऋतु में इसका उपयोग न करें, सप्तधान्य उबटन का उपयोग करें।

-हेतराम जाणी

कैसे करें साक्षात्कार तैयारी

आइये जानते हैं इंटरव्यू में सफल होने के लिए इन बातों पर ध्यान देना आवश्यक है।

CV/Resume को बनाने में पूरी सावधानी बरतें

आपकी CV का मकसद अपने potential employer को यह दिखाना होना चाहिए की क्यों आप इस जॉब के लिए इमेज person हैं। आपकी CV ही आपसे सम्बन्धित वो पहली चीज होती है जो Interviewer के सामने जाती है। कह सकते हैं कि उनकी नजरों में यही आपका first impression होता है। अगर interviewer को सीवी अच्छी नहीं लगी या उसमें बचकानी गलतियाँ दिखीं तो आपके लिए उसका perception खराब हो सकता है और ये भी ध्यान रखें कि आपकी छोटी-छोटी बातें कहीं ना कहीं आपकी बड़ी-बड़ी हरकतों की ओर भी इशारा करती हैं। अगर कोई व्यक्ति अपनी CV बनाने में असावधान है तो जॉब में भी उसके ऐसा करने के काफी अवसर हैं और ये बात interviewer अच्छी तरह से जानता है।

CV अच्छे से बनाना इसलिए भी जरूरी है क्योंकि ज्यादातर कंपनियों में पहले CV के आधार पर ही candidates को छांट दिया जाता है और अगर आप यहीं छांट गए तो बाकी टिप्स रखी की रखी रह जायेंगी। इसलिए इस महत्वपूर्ण कदम को कतई चूक ना करें।

कुछ महत्वपूर्ण बिन्दू जिन पर आपको ध्यान देना चाहिए। आपकी CV का look professional होना चाहिए।

बड़े -बड़े paragraph की जगह bullet points use करें, ये interviewer को CV पढ़ने के लिए ज्यादा प्रेरित करते हैं।

अगर CV दो पेज में बन सकती है तो जबरदस्ती उसे चार पेजों का ना बनाएं।

अलग -अलग जॉब के हिसाब से अपने CV में थोड़े बहुत बदलाव करें।

उन बिन्दुओं को चिह्नित करने की कोशिश करें जो इस जॉब से सम्बन्धित हों।

जॉब से सम्बन्धित सैद्धान्तिक जानकारी को जरूर ध्यान में रखें : जॉब से सम्बन्धित सैद्धान्ति जानकारी को बराबर महत्व दें। जिनके पास practically काम कैसे होता है इस बात की अच्छी जानकारी है, पर वो तकनीकी शर्तें और सिद्धान्त में lack करते हैं और इस वजह से उन्हें इंटरव्यू में उतनी सफलता नहीं मिल पाती। आप इस तरह की गलती ना करें और सैद्धान्तिक जानकारी को कम ना आंकें।

अगर मैं अपनी बात करूँ तो इंटरव्यू की पूरी तैयारी का 60% समय इसी काम में देता हूँ। यहाँ पर दिया गया effort और चीजों को आसान बना देता है, आपका आत्मविश्वास बढ़ जाता है और आप जो उत्तर देते हैं उसमें ये साफ झलकता भी है। Interviewer भी शुरूआती उत्तर की गुणवत्ता से ही जान लेता है कि आप एक well prepared candidate हैं या एक casual candidate हैं।

इंटरव्यू को कभी हल्के में नहीं लेना चाहिए, यह एक प्रतियोगिता है, इसमें खुद को दूसरों से बेहतर साबित करना होता है और आप किसी भी विभाग में कोताही नहीं बरत सकते। इसलिए आप जो भी इंटरव्यू देने जा रहे हैं उस क्षेत्र से सम्बन्धित सैद्धान्तिक जानकारी पर अतिरिक्त ध्यान दें।

मैं यहाँ practical knowledge को इसलिए emphasize नहीं कर रहा हूँ क्योंकि यदि आप एक fresher हैं तो आपसे practical knowledge expected नहीं है और यदि आप तजुर्बेकार हैं तो definitely आपके पास practical knowledge होगी ही।

खुद को Employer की जगह रखकर देखें: ये सोचिये कि अगर आप Interviewer होते तो एक ideal candidate के अन्दर क्या खोजते। जो job vacancy है उसकी specific need को समझने की कोशिश कीजिये और उन needs को पूरा करने के लिए जो qualities चाहिएं उसे interview में showcase कर सकते हैं। दूसरी तरफ आप उन qualities को छुपा भी सकते हैं जो इस जॉब के लिए फिट नहीं बैठतीं।

उदाहरण: अगर मार्केटिंग जॉब के लिए जा रहे हैं, तो आपकी travelling की hobby को आप highlight कर सकते हैं, पर यदि आप operations की जॉब के लिए जा रहे हैं तो आपको इसे highlight नहीं करना चाहिए। अलग-अलग जॉब की आवश्यकता के हिसाब से आप अपनी CV में बदलाव कर सकते हैं और उसे और भी प्रभावी बना सकते हैं।

अगर पेड़ भी चलते

अगर पेड़ भी चलते होते
कितने मजे हमारे होते।
बांध तने में उसके रस्सी
चाहे जहां कहीं ले जाते।

जहां कहीं भी धूप सताती
उसके नीचे झट सुस्ताते,
जहां कहीं वर्षा हो जाती
उसके नीचे हम छिप जाते।

लगती जब भी भूख अचानक
तोड़ मधुर फल उसके खाते,
आती कीचड़ बाढ़ कहीं तो
झट उसके ऊपर चढ़ जाते।

अगर पेड़ भी चलते हो
कितने मजे हमारे होते।

–**लक्षिता,** गांव गंगा, सिरसा

सूरज भाई

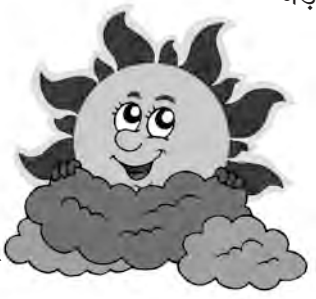

क्या कहने हैं सूरज भाई
अच्छी खूब दुकान सजाई

और दिनों की तरह आज भी
जमा दिया है खूब अखाड़ा
पहले किरणों की झाड़ू से
घना अंधेरा तुमने झाड़ा
फिर कोहरे को पोंछ उषा की
लाल लाल चादर फैलाई।

ज्यों ही तुमको आते देखा
डर कर दूर अंधेरा भागा
दिन भर को आपा धापी से
थक कर जो सोया था जागा
झाँक झाँक कर खिड़की द्वारे
जब तुमने आवाज लगाई।

दिन भर अपना सौदा बेचा
जैसे किरण, धूप, गरमाहट
शाम हुई दुकान समेटो
उठा लिया सामान फटाफट
बस फिर उस दिन बादल आए
जिस दिन लेटे ओढ़ रजाई।

एक बीज

मिट्टी का गहरा अंधकार,
डूबा है उसमें एक बीज
वह खो न गया, मिट्टी न बना
कोदों, सरसों से शूद्र चीज!

उस छोटे उर में छुपे हुए
हैं डाल-पात औ' स्कन्ध-मूल
गहरी हरीतिमा की संसृति
बहु रूप-रंग, फल और फूल!

वह है मुट्ठी में बंद किये
वट के पादप का महाकार
संसार एक! आश्चर्य एक!
वह एक बूंद, सागर अपार!

बंदी उसमें जीवन -अंकुर
जो तोड़ निखिल जग के बंधन
पाने को है निज सत्त्व, मुक्ति!
जड़ निद्रा से जग, बन चेतन

आ: भेद न सका सृजन रहस्य
कोई भी! वह जो शूद्र पोत
उसमें अनंत का है निवास
वह जग जीवन से ओत-प्रात!

मिट्टी का बहरा अंधकार
सोया है उसमें एक बीज
उसका प्रकाश उसके भीतर
वह अमर पुत्र! वह तुच्छ
चीज?

जाम्भाणी प्रश्नमाला 3

प्र.1. गुरु जाम्भोजी की दादी जी का क्या नाम था ?

प्र.2. माता हंसा का गौत्र क्या था ?

प्र.3. गुरु जाम्भोजी ने 'शुक्ल हंस' सबद किसके प्रति कहा था ?

प्र.4. जांभाणी कवि सूरजन जी पूनियां कहां के निवासी थे ?

प्र.5. संत वील्होजी की समाधि कहां स्थित है ?

प्र.6. 'सुरगां हूंतो शिंभू आयो कहा किणा के काजै' कौन से सबद की पंक्ति है ?

प्र.7. जाम्भोलाव में दोनों मेले कब-कब लगते हैं ?

प्र.8. खेजड़ली शहीदी दिवस कब मनाया जाता है ?

प्र.9. 'रुक्मिणी मंगल' के रचयिता कौन हैं ?

प्र.10. किस जाम्भाणी कवि ने तुलसीदास से पहले 'रामायण' की रचना की थी ?

इन प्रश्नों के उत्तर पोस्टकार्ड पर लिखकर 20 मार्च तक 'अमर ज्योति' कार्यालय बिश्नोई मन्दिर, हिसार के पते पर भेजें या editor@amarjyotipatrika.com पर ईमेल करें। सभी प्रश्नों के सही उत्तर देने वाले 5 विजेताओं के नाम ड्रा द्वारा निकाले जाएंगे, जिनको 200-200 रुपये का जांभाणी साहित्य पुरस्कार स्वरूप भेजा जाएगा। आगामी अंक में पुरस्कार विजेताओं के नाम व इन प्रश्नों के उत्तर प्रकाशित किए जाएंगे। उत्तर भेजने वालों से अनुरोध है कि वे अपना पूरा पता व दूरभाष नंबर साथ में अवश्य भेजें। **-सम्पादक**

जाम्भाणी प्रश्नमाला 2 के उत्तर

उ.1. गुरु जाम्भोजी के दादा का नाम रोलोजी पंवार था।

उ.2. माता हंसा का पीहर द्रोणपुर (तालछापर) था।

उ.3. तांतू की ससुराल ननेऊ गांव में थी।

उ.4. 'विसनु भणन्ता पाप खयो' संध्या मंत्र (नवण मंत्र) की पंक्ति है।

उ.5. 'नव अवतार नमो नारायण तेपण रूप हमारा थीयो' सबद 5 की पंक्ति है।

उ.6. गुरु जाम्भोजी साक्षात भगवान विष्णु के अवतार थे।

उ.7. 'कथा बाळलीला' केशोजी गोदारा की रचना है।

उ.8. लूर की रचना उदोजी अडिग ने की थी।

उ.9. 'उमावड़ो' साखी वील्होजी द्वारा रचित है।

उ.10. जम्भभक्त बाजोजी तरड़ जसरासर के निवासी थे।

सभी प्रश्नों के सही उत्तर देने वाले पाँच भाग्यशाली विजेताओं के नाम-

1. मानती देवी गोदारा, गांव झूम्पा कलां, जिला भिवानी; **2. अमित पंवार,** रावला मण्डी, जिला गंगानगर; **3. मनीष बिश्नोई,** नोखा, जिला बीकानेर (राज.); **4. रामेश्वर सहारण,** गांव भाना, जिला हिसार; **5. हनुमान माल,** गांव श्रीबालाजी, जिला नागौर।

नोट : सभी विजेताओं को 200-200 रुपये का जाम्भाणी साहित्य पुरस्कार डाक द्वारा भेजा जा रहा है। जांभाणी साहित्य प्रश्नमाला के प्रश्नों के उत्तर भेजने वाले सभी प्रतियोगियों का हार्दिक आभार।

वन्य जीव और मनुष्य

अनादि काल से भारतीय संस्कृति में वन्य जीवों का मनुष्य के जीवन से अटूट नाता रहा है। अवतारों से लेकर देवी-देवताओं के साथ वन्य प्राणी जुड़े हुए हैं। मच्छ, कच्छ, कूर्म और नरसिंह अवतारों ने तो वन्य और जल जीवों का रूप धार कर ही पृथ्वी का कल्याण किया था। सनातन धर्म में त्रैमूर्ती को श्रेष्ठ माना गया है। जैसे विष्णु देवता गरुड़ पक्षी पर और सदाशिव भोले नाथ नन्दी बैल की सवारी करते हैं। शक्ति का प्रतीक दुर्गा जी का वाहन शेर है। इसी तरह भगवान रामचन्द्र ने वानरों की सहायता से ही महाबली रावण पर विजय पाई थी। कृष्ण भगवान का गऊओं से अधिक प्रेम था।

प्राणियों में गाय को पवित्र माना जाता है और पूजा की जाती है। इसी तरह हाथी को बुद्धिमत्ता में सब वन्य जीवों से ऊपर माना जाता है। एक हाथी की कथा का महात्मा बुद्ध जब राजपाट त्याग के जंगलों में भक्ति करने गए तो एक घने जंगल में उन्होंने अपना तपस्थान चुना। उस निर्जन वन में भेड़ियों, सिंह और खूंखार दरिन्दों का वास था। यहां पर महात्मा जी का तपस्थान था उसके नजदीक हाथियों का एक झुंड रहता था। कुछ समय के पश्चात् एक हाथी महात्मा जी के पास आने लगा। जब महात्मा जी पूर्ण समाधि में होते तो वह वहां पहरा देता और किसी भी जंगली जीव को उनकी समाधि के समीप नहीं आने देता था।

धीरे-धीरे वह महात्मा जी के धूने में जलाने के लिए सूखी लकड़ियों लाने लगा। उसको महात्मा जी से पूरा स्नेह हो गया। समीप से बहती नदी से महात्मा जी का लोटा जल भर कर ले आता। जितनी देर महात्मा जी समाधि में रहते वह वहां पूरा सावधान रहता।

कुछ समय के पश्चात जब महात्मा बुद्ध को अध्यात्मिक अनुभव प्राप्त हो गया तो वे उस तपस्थान को छोड़ कर चले गए तो उस हाथी ने तड़प-तड़प कर वहीं प्राण त्याग दिए। उस हाथी की कुर्बानी को आज समस्त बोध जगत पूजता है। बोधी मठों में सब जगह हाथी की प्रतिमा को पूजा जाता है।

संत कबीर जी और संत नामदेव जी अपने विचारों का प्रचार करने की वजह से उस काल के शासकों ने उनको हाथी के आगे पोटली में बांध कर फिकवा दिया था। परन्तु हाथी ने उनको प्रभु के प्यारे समझकर मारने की जगह सूंड से नमस्कार किया। इस संदर्भ में संत में संत कबीर का एक सबद है -

झुजा बांधि मिला कर डारियो।
हस्ती क्रोपि मूंड महि मारिओ॥
हस्ती भागि कै वीसा मारै, हुआ मूर्ति के हऊ बलिहारै।
क्या अपराध संत है कीन, बांधि पोट कुंवर को दीना॥
कुंवर पोट लै लै नमस्कारै, बूझी नहीं काजी अंधिकारे।

इन कथाओं से यह ज्ञात होता है कि वन्य जीवों का भी मनुष्य के प्रति बहुत स्नेह होता है।

- महेन्द्र सिंह 'राही'
डेरा स्माधा खुज्डी कलाँ, जिला बरनाला (पंजाब)
मो. 09356092469

स्वच्छता/पर्यावरण संरक्षण अपील

मुक्ति धाम मुकाम एवं सम्भराथल धोरे पर पधारने वाले सभी श्रद्धालुओं से करबद्ध निवेदन है कि आप विश्व विख्यात इन स्थलों पर जब-जब भी आएं यहां के पर्यावरण को बचाने और स्वच्छता बढ़ाने में अपना भरपूर सहयोग प्रदान करें। आप सम्भराथल धोरे, मुक्ति धाम मुकाम एवं इसके अतिरिक्त सभी सामाजिक मेलों में प्लास्टिक थैलियों (पॉलिथीन), प्लास्टिक के कप गिलासों का प्रयोग बिल्कुल नहीं करें। इन प्लास्टिक बर्तनों में खाने-पीने से स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है तथा कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी होने की भी संभावना पूरी रहती है और इस प्लास्टिक कचरे से हमारे तीर्थ स्थलों का नैसर्गिक बिल्कुल नष्ट हो जाता है तथा इन स्थलों का परिसर कूड़ाघर के रूप में नजर आता है जो विश्व के प्रथम पर्यावरण प्रणेता गुरु जम्भेश्वर भगवान की शिक्षा के बिल्कुल विपरीत है। आपकी सुविधा के लिए मेले में जगह-जगह रखे कचरा पात्रों में ही कचरा डालें। आपका सहयोग से ही संसार के सबसे साफ-सुथरे मेलों की सूची में सबसे ऊपर नाम हमारे मेलों का लिखवाने के हमारे लक्ष्य को सफलता प्राप्त हो सकेगी।

आपका सेवक

पर्यावरणप्रेमी खमुराम बिश्नोई, मो.: 09116075111, 09950807055

बिश्नोई परम्परा में जागरण और मेले

मुकाम की परम पावनी व मुक्ति दायिनी धरा पर फाल्गुन मेला आयोजित होने जा रहा है। मुकाम का अभिप्राय है- मंजिल, गन्तव्य स्थान।

गुरु महाराज से मिलने को जनता मेला स्थल की पावन धरा पर एकत्रित होती है। यज्ञ की पवित्र अग्नि में हम परमात्मा के दिव्य तत्व का अहसास भी करते हैं।

इसी प्रकार बिश्नोई परम्परा में जागरण की भी बड़ी महिमा कही गई है। भगवान श्री जम्भेश्वर ने स्वयं श्री बाजोजी तरड़ के घर जागरण की शुरूआत की थी। उसका यशोगान अभी तक हो रहा है। जागरण हमें अज्ञान से ज्ञान में जगाने का भाव सिखाता है- मेला मेलभाव का। आपस के सारे भेदभाव भुलाकर आत्मीय भाव से एक स्थान पर मिलकर भगवद् भक्ति का भाव जगाता है। यह दोनों ही उज्ज्वल परम्पराएं आज तक समाज को एकजुटता के सूत्र में पिरोने वाला महत्वपूर्ण बन्धन रही हैं। युग बदला, युग के साथ युग की रीत बदली। दोनों ही सामाजिक परम्पराओं में आज कई विकृतियां भी अपने लिए स्थान बनाती जा रही हैं। मेलों में जहां कदाचार और व्यसनों की प्रवृत्ति यदा-कदा देखने को मिलती है, वहीं जागरण में आडम्बर, शोशेबाजी और प्रदर्शन प्रियता की प्रवृत्ति घर करती जा रही है।

जाम्भाणी पंथ की दोनों ही अमूल्य धरोहरें विकृतियों का शिकार हो चुकी है। जागरण एक विवाह पार्टी का रूप धारण करता जा रहा है जिसमें अनेक प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन बनते हैं, भीड़ जमा होती है। रात्रि 11 बजे तक लोग खा-पीकर वापस अपने घरों को लौट जाते हैं। जागरण का वास्तविक उद्देश्य 'संगत और पंगत' साथ मिलकर प्रभु प्रसाद ग्रहण कर ईश्वर का गुणगान करें, गौण होता जा रहा है। दिखावे और प्रदर्शन की परम्परा जड़ जमाती जा रही है। जागरण मण्डप में सुनने वालों की संख्या गायणाचार्यों के अलावा नगण्य सी होती है। ऐसा करने से धार्मिक आस्था क्षीण पड़ती है, पाप के भागी बनते हैं हम। कहा गया है- **'जाणत भूला महा पापी'**।

गुरु महाराज के आदेश 'वर्ष एक में गुरुवचन, जमो करो चितलाय' को ध्यान में रखकर सादगी व शुद्ध भावना के साथ विधि-विधानपूर्वक जागरण लगाना चाहिए। जिससे घर, परिवार, समाज में सुख-शान्ति व सद्भावना का प्रसार हो। जागरण में 'भोज' नहीं 'प्रसाद' की भावना को बल दिया जाना चाहिए।

मनुष्य मात्र में जागृति लाने के लिए तन-मन में ज्ञान और सद्भावों का प्रसार करने के लिए ही सत्संग, जागरण और मेलों का आयोजन किया जाना चाहिए। मुक्ति धाम मुकाम की पवत्रि धूलि, खेजड़यों व हरी कंकहेड़ी की मनोहारी आभा के बीच आसौज और फाल्गुन महीने में लगने वाले मेले व अन्य स्थानों पर विभिन्न अवसरों पर आयोजित होने वाले मेलों का बिश्नोई पंथ में सामाजिक व आध्यात्मिक महत्व है।

अत: मेले की मर्यादा व भावना के अनुरूप ही मेले मनाने चाहिएं। जागरण को तो घर बैठे मुक्ति और प्रभु प्राप्ति का उपाय बताया गया है।

घर में हि तीर्थ बताऊं, सब जीवन की मुक्ति जताऊं,
तामै दु:ख न कलेस कोई, घर बैठा सब की गति होई।
प्रेम भाव कर है जो जाग्रणां, भव सागर से छिन में तरणां,
जाकै घर हर के गुन गावै, रोग व्याध तेहि निकट न आवै॥

(सत साहबराम जी, जंभसार-2, पृ. 185)

परन्तु अब तो हमने जागरण को कलेश का कारण बना लिया है। व्यर्थ का दिखावा और फिजूलखर्ची के भय से हर कोई तो जागरण लगाने का साहस ही नहीं कर पाता। जबकि गुरु महाराज ने श्रद्धा को ही मुख्य बताया है-

इतनी श्रद्धा होवै हूं नाही, षष्ट मास एक जमो करांही।
लाख जीव उधरै ता संभा, जनम मरण होवै भय भंगा॥

(सत साहबराम जी, जंभसार-2, पृ. 185)

अत: फागण मेला एक अवसर है- आत्मचिंतन का कि हम अपनी महान परम्पराओं को किसी प्रकार का आघात न पहुंचे व हम इन आयोजनों द्वारा समाज व राष्ट्र को मजबूती प्रदान करते रहें।

-**दिलसुख राम** पुत्र श्री मेवाराम
गांव शेखुपुरा, दड़ौली
मो.: 9812122588

युवा और समाज

समाज जितना व्यापक शब्द है, उससे भी अधिक व्यापक है यह सवाल कि समाज कौन बनाता है? कौन समाज की जिम्मेवारियां उठाने का हकदार है? किसके कंधों के सहारे यह समाज उच्च दर्जे पर स्थापित रहता है?

नेता, वरिष्ठ नागरिक, शिक्षक, मजदूर, साधारण नागरिक.... आखिर कौन? शायद ये सब मिलकर समाज में मजबूत बनाते होंगे। लेकिन फिर भी एक और सवाल है कि इनमें से सर्वाधिक भागीदारी किसकी है?

तब तत्काल दिमाग में विचार आता है कि इनमें से कोई नहीं बल्कि वो समूह जिसका अब तक जिक्र तक नहीं हुआ। बात हो रही है। युवाओं की समाज को मजबूत बनाने, अखण्ड सोचयुक्त समाज बनाने की सर्वाधिक जिम्मेदारी युवाओं की बनती है। समाज के लिए खुशी की बात है कि समाज की कुल जनसंख्या का 50% से अधिक जनसंख्या 25 से 40 वर्ष की आयु वर्ग की है जिन्हें हम लोग युवा कहते हैं। जो वर्ग सामाजिक, आर्थिक, शारीरिक, मानसिक सभी रूपों से सक्रिय रहता है।

आखिर क्यों युवा अपने समाज के प्रति कर्त्तव्यों को भूल कर बेफिक्र होकर मनमानी करता है? आज हमारे समाज ने अन्य समाज की तुलना में काफी प्रगति की है। इसमें सबसे बड़ा योगदान शिक्षा का है। आज समाज का हर युवा अच्छी से अच्छी शिक्षा पा रहा है। परन्तु दु:ख की बात यह है कि युवा कितना भी पढ़ लिख गया हो लेकिन अपने संस्कार व परिवार और समाज के प्रति जिम्मेदारियों को दिन प्रतिदिन भूलता ही जा रहा है। आज समाज का युवा वर्ग ऊँचाइयों को छूने के लिए वह खुद अपनी जड़ें खुद काट रहा है। आज के युवाओं को सिर्फ और सिर्फ टारगेट ओरिएंटेड बना दिया गया है। आजकल का माहौल ही कुछ इस तरह का हो गया है कि सब केवल अपना भविष्य बनाने में लगे हुए हैं। यहां तक कि आजकल के युवाओं को अपने परिवार के प्रति जिम्मेदारी का एहसास तक नहीं होता है। आज समाज का हर नागरिक भली-भांति अपना अच्छा-बुरा समझता है। युवाओं को सम्प्रदाय और राजनीति से परे अपनी सोच का दायरा बढ़ाना होगा। युवाओं को इस मामले में किसी भी भावना में न बहकर सोच-समझकर निर्णय लेना होगा। कुछ युवा सामाजिक कार्यों को सर्वोपरि मानते हैं, यह वाकई में एक अच्छी और सकारात्मक बात है। इसलिए हमें समय-समय पर अपने युवाओं का मार्गदर्शन करना होगा। जिससे कि वे सही और गलत में पहचान कर सकें तथा अपने समाज को आगे तथा तरक्की पर ले जाने में सहयोग प्रदान कर सकें। शायद युवाओं को अपनी काबलियत का अंदाजा नहीं है क्योंकि युवा पीढ़ी में अदम्य साहस और भरपूर उत्साह होता है। किसी भी समाज का भविष्य उसकी युवा शक्ति के हाथ में होता है। जाग्रत युवा शक्ति सम्पूर्ण समाज में जन जागरण का वातावरण उत्पन्न करने की क्षमता रखती है। समाज की युवा शक्ति उस समाज को दिशा देने में सक्षम होती है। स्वयं शिक्षित युवा पीढ़ी उचित मार्ग पर चलते हुए सम्पूर्ण समाज को कर्त्तव्य पालन के लिए प्रेरित कर सकती है।

समाज में व्याप्त अनाचार, भ्रष्टाचार, कुरूतियों का विरोध करना युवा शक्ति के लिए कोई कठिन नहीं है। युवा शक्ति ठान ले तो जन जागरण के द्वारा अनाचारियों एवं भ्रष्ट कर्मियों पर अंकुश लगाने में सफल हो सकती है। युवा शक्ति निस्संदेह सक्षम होती है। परन्तु उसके एक गलत निर्णय से उसकी शक्ति के दुरूपयोग का खतरा बढ़ जाता है। युवा शक्ति को पहले खुद अपने आप को संगठित करना होगा। समस्त युवाओं की सोच को समाजहित की दिशा में करना होगा। समस्त युवाओं को सामाजिक कार्यों में महत्व देना चाहिए एवं खुद पर नियंत्रण करना होगा। मैं इस युवा पीढ़ी से आग्रह करता हूँ जिसमें मैं भी शामिल हूँ कि 'बांटकर खाओ' एक अच्छी कहावत है लेकिन एक होकर आगे बढ़ना इससे भी अच्छी कहावत है।

इस नदी की धार से कोई हवा आती तो है,

नाव जर्जर ही सही लहरों से टकराती तो है।

एक चिंगारी कहीं से ढूंढ लाओ यारो,

इस दीपक में तेल से भीगी बाती तो है।

तात्पर्य है समाज को इसी चिंगारी की ही जरूरत है जो शायद युवा वर्ग ढूंढकर ला सकते हैं एवं प्रयोग करके समाज को नई पहचान दिलाने में सफल हो सकते हैं।

-बजरंग लाल डेलू पुत्र श्री जीतूराम डेलू
ग्रा. व पोस्ट- काकड़ा, तह. नोखा, बीकानेर (राज.)
मो. : 9887660821

मुकाम में राष्ट्रीय विधिक संगोष्ठी आयोजित

दिनांक 31 जनवरी, 2016 को मुक्तिधाम मुकाम में अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा द्वारा एक दिवसीय राष्ट्रीय विधिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। 30 जनवरी को मुकाम में उमंग भरा वातावरण था। मन में आपार खुशियां लेकर देश के कोने-कोने से संगोष्ठी में भाग लेने आए अधिवक्तागण एवं माननीय न्यायाधीश अपने परिवारों सहित श्री भगवान जम्भेश्वर के समाधि स्थल पर धोक लगा रहे थे। भोजनालय के महिला सभागार में संगोष्ठी का आयोजन स्थल था। दिल्ली, हिसार कुरुक्षेत्र, भिवानी, सिरसा, फतेहाबाद; मुरादाबाद; हरिद्वार; अबोहर; दक्षिणी महाराष्ट्र से सी.ए मांगीलाल सहारण; अहमदाबाद और राजस्थान प्रदेश के विभिन्न जिलों के अधिवक्तागण एवं विधि विशेषज्ञों ने इस संगोष्ठी में भाग लिया और राजस्थान, पंजाब, हरियाणा में कार्यरत न्यायायिक अधिकारियों ने भी भाग लिया। रात्रिकालीन सभा 8:30 बजे शुरू हुयी। संगोष्ठी के संयोजक श्री रामस्वरूप मान्झू एडवोकेट वरिष्ठ उपाध्यक्ष महासभा एवं सहसंयोजक मनोहरलाल कडवासरा महासचिव गुरु जम्भेश्वर ने मंच संचालन का कार्यभार सम्भाल कर देश के विभिन्न पधारे अधिवक्तागण एवं जज साहिबान से अपना परिचय देने का आह्वान किया। संगोष्ठी सभागार में पहुचे सभी सहभागियों ने अपना पूर्ण परिचय दिया। इसके बाद रात्रि जागरण में मुकाम पीठाधीश्वर आचार्य श्री रामानन्द जी ने गुरु श्री जम्भेश्वर भगवान की जन्म लीला, सबदबाणी पर विस्तार से व्याख्यान दिया।

इस संगोष्ठी में बिश्नोई समाज के वरिष्ठ अधिवक्ताओं श्री सहीरामजी धारणियां एडवोकेट, पूर्व विधायक एवं पूर्व प्रधान, अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा, सक्ताखेड़ा सुप्रीम कोर्ट देहली में वकालत करने वाले वयोवृद्ध श्री बृजलाल जी खीचड़ एडवोकेट, हिसार; पंजाब के मेहराणा निवासी श्री रामस्वरूप जी गोदारा, अधिवक्ता, श्रीगंगानगर; श्री रामगोपाल जी गोदारा, हनुमानगढ़; श्री बृजभूषण, रतनगढ़; श्री राजाराम जी पूनियां, रायसिंह नगर; श्री रणजीजत बिश्नोई, बीकानेर; श्री रामप्रताप बिश्नोई, श्री गंगानगर एवं श्री हीरालाल भंवाल, प्रधान एडवोकेट को माननीय न्यायमूर्ति श्री विजय बिश्नोई ने शॉल ओढ़ाकर एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मान किया।

विशिष्ठ अतिथि माननीय न्यायमूर्ति श्री लालचन्द जी भादू ने राष्ट्रीय विधिक संगोष्ठी में आए हुए न्यायिक अधिकारी श्री राजेश कड़वासरा, एडीजे लुधीयाना पंजाब; श्री विजय सिंह सिंवर सीजीएम नागौर; श्री गणपत लाल बिश्नोई एसीजेएम; श्री सुनील बिशनोई, श्री लक्ष्मण बिश्नोई एसीजेएम; श्री पवन कुमार बिश्नोई जेएम; श्री अजय साहू जेएम; श्री श्यामसुन्दर जेएम; श्री अजय सिगड़ जेएम को शॉल ओढ़ाकर एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। इस संगोष्ठी में भाग ले रही महिला अधिवक्ता ममता मांझू पदमपुर; सीमा बिश्नोई सुरतगढ़ व श्रीमती सरस्वति बिश्नोई

अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा द्वारा आयोजित राष्ट्रीय विधिक संगोष्ठी में दीप प्रज्ज्वलित करते न्यायमूर्ति श्री विजय बिश्नोई, न्यायमूर्ति श्री लालचंद भादू, अध्यक्ष श्री हरिराम भंवाल।

अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा द्वारा आयोजित राष्ट्रीय विधिक संगोष्ठी में बिश्नोई समाज के गणमान्य व्यक्ति व अधिवक्तागण।

पत्नी श्री बृजलाल, हिसार एवं श्रीमती रामदेयी पत्नी श्री रामस्वरूप गोदारा, गंगानगर को भी श्री सहीराम जी धारणियां ने शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया।

भामाशाह श्री देवेन्द्र बुड़िया जोधपुर; श्री सोमप्रकाश सिगड़ सिरसा, सचिव महासभा को जिन्होंने डायरी एवं श्री गुरु जम्भेश्वर कलेण्डर छपवाए। श्री कृष्ण मांझू, श्री राजेन्द्र धायल, श्री सुभाष खिचड़ दिल्ली जिन्होंने संगोष्ठी की फाइल उपलब्ध करवायी, इनको अध्यक्ष श्री हिरालाल भंवाल ने साफा पहनाकर एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। तत्पश्चात् श्री रामस्वरूप मांझू ने स्वागत भाषण में कहा कि बिश्नोई समाज की पहचान वन्य जीव सरंक्षण एवं वन प्रेमी के रूप में मानी जाती है। पर्यावरण प्रदूषण आज सम्पूर्ण विश्व की ज्वलंत समस्या है न केवल मानव जाति अपितु पशु-पक्षी भी इस समस्या से त्रस्त हैं। यही कारण है कि पर्यावरण को बचाने के लिये वन सरंक्षण अधिनियम वन्य जीव सरंक्षण 1972 जल प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण अधिनियम 1974, वायु प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण अधिनियम 1981 बने और पर्यावरण सरंक्षण अधिनियम 1986 बिश्नोई रत्न चौ. भजनलाल जी की देन थी जब वे भारत सरकार में केन्द्रीय

पर्यावरण मंत्री थे। चौधरी साहब द्वारा संसद में दिये जाने वाली 100 स्पीचों में पर्यावरण सरंक्षण पर दिया गया सर्वश्रेष्ठ भाषण था। अधिवक्ता श्री रामस्वरूप जी गोदारा, गंगानगर ने अपने उद्‌बोधन में बाल-विवाह की रोकथाम का आह्‌वान कर बताया कि कम उम्र में बच्चों की शादी कर देने से उनके स्वास्थ्य मानसिक विकास और खुशहाल जीवन पर असर पड़ता है।

एडवोकेट अरविन्द बिश्नोई हनुमानगढ़ ने पर्यावरण सरंक्षण अधिनियम 1986 के बारे में बताया कि हमारे भारतवर्ष के संविधान के अनुच्छेद 21 के अन्तर्गत पर्यावरण सरंक्षण व्यक्ति का मूल अधिकार माना गया है और संविधान के अनुच्छेद 51(क) में पर्यावरण सरंक्षण व्यक्ति का मूल कर्तव्य भी माना गया है। "भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह प्राकृतिक पर्यावरण की जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव है रक्षा करें और उनका सवंर्धण करें तथा प्राणी मात्र के प्रति दयाभाव रखें।" विनोद कड़वासरा, फतेहाबाद ने गुरु जाम्भोजी महाराज के पर्यावरण सिद्धान्त एवं वन्यजीव सरंक्षण पर बोलते हुए बताया कि आज हमें वन्य प्राणियों की सुरक्षा का दायित्व लेना चाहिए। हरियाणा के बिश्नोई बाहुल्य गांव बड़ोपल के कुम्हाड़िया रोड जो वन्य जीवों की सरंक्षण स्थली है। कुलांचे भरते स्वर्ण मृग सजग प्रहरी की तरह खड़े काले हिरणों को देखते ही लगता है कि हम किसी घने जंगल में है। श्री गुरु महाराज की कृपा से यह स्थान सरंक्षित होना निश्चित है। कुरुक्षेत्र से आए एडवोकेट आत्माराम पूनियां ने कहा कि सन् 1972 द्वारा वन्यजीव कानून को सख्त बनाया जावे। इस अधिनियम में धारा 4, 5, 6, 7, 8 में केन्द्र वन बोर्ड राज्य वन बोर्ड, परामर्श मण्डल सलाहकार समितियों के प्रावधान किये गये है मगर धारा 54 में राजीनामें की शक्ति व धारा 55 में सज्ञान की शर्तें डालकर इस कानून को कमजोर कर दिया है।

एडवोकेट सुखराम जी खिचड़ जोधपुर हाइकोर्ट ने संगोष्ठी में बोलते हुये जल प्रदूषण निवारण तथा नियन्त्रण अधिनियम 1974 में जल प्रदूषण के विषय में विस्तार से बताया। प्रदूषित जल मानव सहित जीव जन्तुओं व जलीय जीवों के लिये हानिकारक हो जाता है। सुभाष गोदारा एडवोकेट हिसार ने अपने सम्बोधन में कहा कि इस संगोष्ठी के माध्यम से एक आपसी सदभावना का संदेश जाना चाहिए। वनों के रक्षार्थ श्री गुरु महाराज के बताए नियमों में "जीव दया पालणी रूंख लीलो नी घावे" अर्थात् जीवों पर दया करो हरे वृक्षों को मत काटो। आगामी संगोष्ठी हिसार में करवाने का भी आह्‌वान किया। एडवोकेट श्री लालाराम ज्याणी नागौर ने अपने विचारों को सांझा करते हुए कहा कि श्री जाम्भोजी के द्वारा बताए नियमों में तम्बाकू का सेवन नहीं करना चाहिए। राजस्थान सरकार ने दिनांक 18 जुलाई 2012 से सम्पूर्ण राजस्थान राज्य में केन्द्रीय खाद्य सुरक्षा कानून के तहत जर्दा मिला पान मसाला पर रोक लगा दी है। राष्ट्रीय विधिक संगोष्ठी में उत्तर प्रदेश से पधारे वकील राजवीर बिश्नोई, मुरादाबाद ने वायु प्रदूषण पर बोलते हुए कहा कि वायु जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक है। यदि व्यक्ति को स्वच्छ हवा व वायु ना मिले तो उसका जीवन संकट में पड़ जाता है आज प्रदूषित वायु से जनजीवन संकट में पड़ गया है। इस कानून को और सख्त बनाया जावे। अबोहर पंजाब से पधारे वरिष्ठ अधिवक्ता श्री कृष्ण कड़वासरा ने ध्वनि प्रदूषण पर बोलते हुए कहा कि ध्वनि प्रदूषण वर्तमान समय की एक भयावह समस्या है वातावरण में बढ़ते हुए शोर से आम आदमी परेशान हैं। वाहनों, औद्योगिक कारखानों आदि से उत्पन्न ध्वनि न केवल अप्रिय होती है अपितु वह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती है। कुमारी सीमा एडवाकेट सुरतगढ़ ने भी कन्या भ्रूण हत्या पी.सी.पी.एन.डी.टी पर उदबोधन में कहा प्रसूति पूर्व अथवा पश्चात् आनुवांशिक विकारों भ्रूण के शरीर की विषमताओं का पता लगाने के लिए प्रसूति पूर्व परीक्षण तकनीक के नियमन हेतु इस तकनीक के दुष्प्रयोग को रोकने एवं लिंग का पता कर कन्या भ्रूण की हत्या को रोकने इत्यादि के प्रयोग हेतु सरकार ने एक कानून बनाया है जिसे गर्भधारण पूर्व प्रसव पूर्व निदान तकनीक लिंग चयन प्रतिरोध अधिनियम 1994 कहते हैं। कोई भी डॉक्टर या तकनीकी सहायक जो ऐसी गैर कानूनी जांच करता है तो उसे 3 साल तक जेल और 10000 रुपये तक का जुर्माना हो सकता है। इसके बाद राष्ट्रीय विधिक संगोष्ठी के सहसंयोजक मनोहर लाल कड़वासरा ने भारत सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार माननीय श्री प्रकाश जावडेकर जी द्वारा संगोष्ठी की सफलता के लिए भेजा शुभकामना संदेश पढ़कर सुनाया जो इस प्रकार था-

भारत में 15वीं शताब्दी में हुए पर्यावरण सरंक्षण के अग्रदूत एवं बिश्नोई समाज के संस्थापक गुरु जम्भेश्वर महाराज को सादर नमन करते हुए मुझे ये जानकर हर्ष हुआ कि अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा 31 जनवरी, 2016 को जिला बीकानेर के मुक्तिधाम मुकाम में पर्यावरण एवं वन्यजीव सरंक्षण अधिनियम 1972 वर्तमान समय में प्रासंगिता विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कर रही है जिसमें गत 530 वर्षों से हरे वृक्षों एवं वन्य जीव प्राणियों के रक्षार्थ महत्वपूर्ण योगदान दे रहे बिश्नोई समाज के अधिवक्ता गण एवं न्यायाधीश भाग लेंगे और इस अधिनियम पर विस्तृत विचार विमर्श कर इसे कैसे और अधिक प्रभावी बनया जाए बारे सुझाव देंगे।

जोधपुर उच्च न्यायालय के न्यायाधीश मा. न्यायमूर्ति श्री विजय सिंह बिश्नोई जो कि इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के मुख्य अतिथि है के मार्गदर्शन में अखिल भारतीय बिश्नाई महासभा यह आयोजन सफल हो, इसकी मैं मंगल कामना करता हूँ। **-भवदीय प्रकाश जावडेकर।**

विशिष्ठ अतिथि मानीय न्यायमूर्ति श्री लालचन्द भादू ने संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए कहा कि श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान की समाधि स्थल पवित्र धाम पर संगोष्ठी का आयोजन सराहनीय है। बिश्नोई समाज की पहचान वन्यजीव सरंक्षण एवं पर्यावरण प्रेमी के रूप में जानी जाती है। देश की आजादी के बाद इस दिशा में सर्वप्रथम राजस्थान कतिपय पशु परीक्षण अधिनियम 1950 बना, इस अधिनियम में गाय के साथ मोर, कबूतर, बछड़े के

सरंक्षण हेतु कानून बना। पर इनका वध करने पर 100 रुपये तक के जुर्माने के दण्ड का प्रावधान किया गया है जो महज खानापूर्ति है। इस तरह पर्यावरण की रक्षा एवं वन सरंक्षण हेतु राजस्थान की विधायिका ने सन 1953 में राजस्थान वन के अधिनियम पारित किया। इस अधिनियम में धारा 41 व 42 में वन उपज के परिवहन को रोकने व दण्ड की व्यवस्था की गयी। मगर इन धाराओं की स्पष्ट व्याख्या नहीं होने के कारण आज भी वनों का परिवहन सरेआम हो रहा है। वन सरंक्षण की सुरक्षा नहीं हो रहीं है।

संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे महासभा के अध्यक्ष श्री हीरालाल भंवाल एडवोकेट ने कहा कि आज विधिक संगोष्ठी में अधिवक्ताओं ने संगोष्ठी के विषय वन्य जीव सरंक्षण अधिनियम 1972 पर बहुमूल्य विचार रखे जिनका मैं स्वागत करता हूँ। इस संगोष्ठी के विचार समाज को आगे प्रगति के पथ पर अग्रसर करने में महती भूमिका निभाएंगे। आज हम यहां पर समाज के उत्थान की बातें सोचने हेतु एकत्रित हुए हैं। हमें अपने शारीरिक, मानसिक, धार्मिक, साहित्यिक, राजनैतिक, शैक्षणिक एवं आर्थिक सुधार करके आगे बढ़ना है हमारे विकास के रास्ते में जो अड़चनें आ रही हैं उन्हें दूर करें, यही संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य है। आये दिन जीव हिंसा को रोकने हेतु अपने प्राणों की आहुतियां बिश्नोई समाज ने दी है जिसका ज्वलन्त उदाहरण निहालचन्द धारणियां, गंगाराम बिश्नोई ने वन्य जीवों के रक्षार्थ हेतु अपने प्राण न्यौछावर कर दिये जिन्हें मरणोपरान्त भारत के राष्ट्रपति द्वारा शौर्य चक्र से सम्मानित किया गया। फलौदी के ननेउ गांव के शैतानसिंह भादू ने पिछले वर्ष वन्य जीवों के रक्षार्थ अपने प्राण न्यौछावर कर दिये। शिक्षा के क्षेत्र में हमारा समाज आज भी पिछड़ा हुआ है, इस क्षेत्र में और अधिक प्रयास करने होंगे। प्रसन्नता की बात यह है कि आज समाज के प्रबुद्ध व्यक्ति इस बात को अनुभव कर रहे हैं यह संगोष्ठी शिक्षा के अभाव को अनुभव करने का एक प्रमाण है। बिश्नोई समाज में उपजी समाजिक कुरीतियां व सामाजिक व्यवस्था में सुधार कर शिक्षा के क्षेत्र में आपके सहयोग से नयी तकनीक के माध्यम से समाज को 21वीं सदी में लाना होगा। शिक्षा की कमी को दूर करने के लिए जगह-जगह कोचिंग संस्थाएं खोली गयी हैं जैसे हिसार, जोधपुर आदि। महासभा आगामी दिनों में सशस्त्र बल जिसमें जल, थल, वायु सेना, सीमा सुरक्षा बल एवं पुलिस अधिकारी एवं जवान और सिपाही आदि का सम्मेलन करवाने जा रही है। विज्ञान के क्षेत्र में वैज्ञानिक, डॉक्टर, इंजीनियर, कृषि वैज्ञानिक शिक्षा के स्तम्भ विश्व विद्यालयों के प्राफेसर एवं अध्यापकगण और प्रशासनिक अधिकारी एवं कर्मचारी, समस्त विभागों से सम्बन्ध रखने वाले कर्मचारियों की संगोष्ठी भी करवायेगी। जिससे समाज के प्रभुत्व वर्ग का आपसी मिलन व विचार विमर्श होगा जैसे आज हम सब मिल रहे हैं।

मुख्य अतिथि माननीय न्यायधीश श्री विजय बिश्नोई उच्च न्यायालय जोधपुर ने अपने संम्बोधन में कहा कि मुझे आज श्री गुरु महाराज की पावन भूमि मुक्तिधाम मुकाम में आकर आपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। आप जानते हैं बिश्नोई समाज पर्यावरण सरंक्षण के प्रति बहुत प्रेम रखता है ये विश्व का एकमात्र समाज जिसनें अपने पंथ पर्वतक श्री गुरु महाराज के वचनों व शिक्षा की अनुपालना में पर्यावरण रक्षा हेतु अपने प्राण तक न्यौछावर किये है। समाज में वृक्ष एवं वन्य जीवों के रक्षार्थ कार्य करने वाले सभी सामाजिक संगठनों से आह्वान करता हूँ कि आप एकजुट संगठित होकर मिलजुल कर आपसी सहयोग से वन्य जीव प्राणियों का शिकार करने वाले शिकारियों व हरे वृक्ष काटने वाले माफियाओं के विरुद्ध आवाज बुलन्द कर उनके खिलाफ कानूनी कार्यवाही करनी चाहिए और मैं सभी विधि विशेषज्ञों एवं अधिवक्तागण से कहना चाहूंगा कि आप नियमित एवं सही समय पर अदालत में पहुंचे और ईमानदारी और लगन से मेहनत कर वकालत करनी चाहिए जिससे समाज में आपकी सफल अधिवक्ता के रूप में पहचान हो। वाइल्ड लाईफ एक्ट 1972 को और अधिक सुदृढ़ बनाया जावें ताकि शिकारियों में कानून का खौफ रहे।

राष्ट्रीय विधिक संगोष्ठी में ध्वनि मत से निर्णय हुआ कि वन्य जीव अधिनियम 1972 में संशोधन कर सख्त कानून बनाने का प्रस्ताव पासकर भारत सरकार को भिजवाने का निर्णय लिया। राष्ट्रीय विधिक संगोष्ठी के समापन से पहले सहसंयोजक मनोहर लाल कड़वासरा ने संगोष्ठी को सफल बनाने हेतु कार्य करने वाले महासभा कार्यालय सचिव श्री हनुमान दिलोइया, सेवक दल के कार्यालय सचिव एवं महासभा सदस्य श्री प्रह्लाद गोदारा, श्री सूर्यप्रकाश कम्प्यूटर ऑपरेटर, महासभा के विशेष आमन्त्रित महासभा सदस्य श्री पूनम चन्द लोहमरोड़, रायसिंहनगर अतिथियों की भोजन व्यवस्था सम्मान में श्री कमलेश सहारण राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री गुरु जम्भेश्वर सेवक दल के नेतृत्व में सेवक सदस्य खाजूवाला बीकानेर, हनुमानगढ़ सेवक दल पिलीबंगा, श्री विनोद मांझू, श्री वेदप्रकाश मैनेजर टिब्बी तहसील से, सेवक दल राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य ऑडिटर श्री इन्द्रजीत धारणियां एवं श्री सन्दीप कड़वासरा गिलवाला एवं महासभा व सेवक दल के समस्त कर्मचारियों का भरपूर सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद किया। राष्ट्रीय विधिक संगोष्ठी का मंच संचालन मुम्बई से पधारे सी.ए. श्री मांगीलाल जी सहारण एवं प्रोफेसर मनोहर लाल कड़वासरा ने किया। चण्डीगढ़ से पधारे श्री दर्शन सिंह एडवोकेट ने भारतवर्ष से संगोष्ठी में आए न्यायिक अधिकारी व अधिवक्तागण का आभार जताया। अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा की प्रबन्ध समिति के वरिष्ठ सदस्य श्री राजाराम धारणियां नोखा ने मुख्य अतिथि माननीय न्यायाधीश श्री विजय बिश्नोई, उच्च न्यायालय जोधपुर; विशिष्ठ अतिथि श्री लालचन्द भादू जी एवं सभी सहभागी न्यायिक अधिकारी व अधिवक्ताओं को भावभीनी विदाई देकर रवाना किया। महासचिव विनोद धारनियां ने अनुरोध किया कि जिन अधिवक्ताओं ने अपना फोटो व परिचय अब तक नहीं भेजा है वो 15 मार्च तक महासभा कार्यालय में जमा करवाएं।

-प्रो. मनोहरलाल कड़वासरा

पुल्होजी धाम का लोकार्पण समारोह सम्पन्न

श्री पुल्होजी धर्मार्थ एवं परमार्थ ट्रस्ट, रणीसर द्वारा प्रायोजित कार्यक्रमानुसार नवनिर्मित मंदिर की कलश स्थापना वि. स. 2072 की माघ मास की सोमवती अमावस्या तद्नुसार 8 फरवरी, 2016 को स्वामी श्री भागीरथदास जी आचार्य, महंत श्री भगवानदास जी और महंत जयसुखदास जी के करकमलों से किया गया।

श्री पुल्होजी धाम: पूल्होजी के साथरी के जीर्णोद्धार की नींव नरसिंह जयंती के शुभ लग्न में दिनांक 7 मई, 2009 तद्नुसार वैशाख सुदी तेरस वि.स. 2066 वार गुरुवार को रखी गयी थी।

शोभायात्रा में उमड़े भक्तगण: इस अवसर पर स्वामी जुगतीराम जी शास्त्री के सान्निध्य में शोभायात्रा 1 फरवरी, 2016 को जाम्भोलाव से रणीसर धाम तक निकाली गयी तथा 2 से 7 फरवरी, 2016 तक प्रतिदिन दोपहर 12 से 3 बजे तक श्री जाम्भाणी सत्संग युवा विद्वान स्वामी सूदेवानंद जी द्वारा सम्पन्न किया गया। 7 फरवरी को रात्रि में सत्संग का आयोजन श्री महंत भजनदास जी व संत मंडली द्वारा किया गया। 8 फरवरी को वृहद् हवन व पाहल के बाद धर्म सभा श्री कुलदीप जी बिश्नोई के मुख्य अतिथि व श्री रामानंद जी पीठाधीश्वर, मुक्तिधाम मुकाम; श्री हीराराम भंवाल, अध्यक्ष, अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा की अध्यक्षता और पूर्व मंत्री दूड़ारामजी बिश्नोई, फलौदी विधायक श्री पब्बाराम जी और जोधपुर सांसद श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत तथा लोहावट प्रधान श्री भागीरथ जी बेनीवाल की मौजूदगी में हुई।

धर्म सभा में जोधपुर सांसद ने बताया की समाज का विकास नारी शिक्षा से होगा। धर्म सभा में विजय लक्ष्मी बिश्नोई,

श्रीपुल्होजी धर्मार्थ एवं परमार्थ ट्रस्ट, रणीसर में नवनिर्मित मंदिर की कलश स्थापना के अवसर पर पधारे समाज के संतगण, मुख्य अतिथि व अतिथिगण।

अनुराग गोदारा, हुक्माराम जी खिचड़, देवेन्द्र बूड़िया, पप्पूराम डारा, नारायणराम डाबड़ी, मोमराज डारा आदि गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

श्री पूल्होजी धाम, रणीसर पुस्तक का विमोचन: इस लघु पुस्तिका का विमोचन मुख्य अतिथि श्री कुलदीप जी, श्री हीराराम जी भंवाल तथा फलौदी विधायक श्री पब्बाराम जी और जोधपुर सांसद श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत और ट्रस्ट अध्यक्ष श्री पांचाराम जी माँजू के द्वारा किया गया। रूपाराम जी कालीराणा; भँवर जी सारण, पूर्व प्रधान, पोकरण; मोहन जी ठेकेदार आदि गणमान्य नागरिक व समस्त ग्रामवासी रणीसर पड़ीयाल उपस्थित थे।

प्लास्टिक मुक्त रहा मेला: पर्यावरण प्रेमी खमुराम बिश्नोई के नेतृत्व में मेला परिसर को स्वच्छता बनाये रखने में हेण्डिस्ट विद्यालय, देणोक के छात्रों तथा पर्यावरण प्रेमियों ने सेवाएं दी।

-पुखराज बिश्नोई, रणीसर, जोधपुर

शहीद शैतानसिंह को उत्तम जीवनरक्षक पदक

वन्य जीव रक्षार्थ शहीद होने वाले ग्राम ननेऊ के शैतानसिंह भादू को मरणोपरांत उत्तम जीवनरक्षक पदक 2015 राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी द्वारा दिया जाएगा। जिसमें उन्हें पदक, प्रमाण-पत्र और एकमुश्त भत्ता दिया जाएगा। गौरतलब है कि शैतानसिंह को 28 जनवरी, 2014 को वन्य जीव हिरण को बचाते समय शिकारियों की गोली लग गई थी। उनकी शहादत को नमन करने के लिए 30 जनवरी को समाधि स्थल पर मेला भी लगता है। समाज व देश ऐसे जीव प्रेमियों पर बहुत ही गर्व महसूस करता है। समाज, अमर ज्योति पत्रिका परिवार व वन्य जीव प्रेमियों की ओर से समाज के ऐसे शहीदों को कोटि-कोटि नमन और भारत सरकार का भी बहुत धन्यवाद।

सदस्यता सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि बिश्नोई सभा, हिसार की वर्तमान कार्यकारिणी का कार्यकाल 26 अप्रैल, 2016 को पूर्ण हो रहा है। कार्यकारिणी के प्रस्तावित चुनाव के संदर्भ में सूचित किया जाता है कि सभा के आजीवन सदस्य बनने की अन्तिम तिथि 15 मार्च, 2016 है। आजीवन सदस्य बनने का शुल्क 11000/- रुपये है। 15 मार्च के बाद चुनाव तक कोई सदस्य नहीं बन सकेगा। सभी आजीवन सदस्यों से निवेदन है कि अपनी पहचान दस्तावेजों की प्रतिलिपी 15 मार्च, 2016 से पहले बिश्नोई सभा, हिसार के कार्यालय में जमा करवाए अन्यथा उनकी सदस्यता वैध नहीं मानी जाएगी। **-सचिव, बिश्नोई सभा, हिसार**

मुम्बई में दो दिवसीय जाम्भाणी संगोष्ठी आयोजित

मुम्बई भारत की आर्थिक राजधानी और वैभवशाली महानगर है। मुम्बई विश्वविद्यालय मुम्बई भारत की एक प्रतिष्ठित विद्यापीठ है जिसकी स्थापना 1857 में हुई थी। जाम्भाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर; समस्त बिश्नोई समाज, महाराष्ट्र एवं हिन्दी-विभाग, मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई के संयुक्त तत्त्वावधान में 'गुरु जाम्भोजी की वाणी में प्रतिबिम्बित लोकमंगल' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन शंकर चव्हाण सभागृह, मुम्बई में दिनांक 6-7 फरवरी, 2016 को बहुत भव्य रूप में किया गया। उद्घाटन सत्र का आयोजन 6 फरवरी को प्रातः 10.30 से 12.30 तक किया गया जिसमें मुख्य अतिथि श्रीलादूराम बिश्नोई, संसदीय सचिव, राजस्थान सरकार थे। अध्यक्ष डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित, पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ थे। विशिष्ट अतिथि श्री पब्बाराम बिश्नोई, विधायक फलौदी, राजस्थान विधानसभा थे। श्री रामजी तिवारी, पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई बीज वक्ता थे। डॉ. विष्णु आर. सरवदे, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई ने स्वागत भाषण दिया। डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय, प्रोफेसर, हिंदी विभाग, मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई ने संगोष्ठी की प्रस्तावना प्रस्तुत की। डॉ. बाबूराम, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र ने बड़े विद्वत्तापूर्ण ढंग से संगोष्ठी के विषय का प्रवर्त्तन किया। श्री रामजी तिवारी, पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, मुम्बई विश्वविद्यालय, मुम्बई ने कहा इस भयंकर कलिकाल में गुरु जाम्भोजी की वाणी लोकमंगल से ओतप्रोत है। उनके लोकमंगल का अर्थ है सर्वमंगल। मध्यकाल का समय बड़ा संकटपूर्ण था। संतों की दिव्यवाणी अत्याचारी समाज विरोधी शासन के विरुद्ध थी। गुरु जी की वाणी अमर है और आज भी प्रासंगिक है।

श्री पब्बाराम और श्री लादूराम जी आदि ने भी पर्यावरण संरक्षण और पौधारोपण के सम्बन्ध में अपने अमूल्य विचार प्रकट करते हुए गुरु जाम्भोजी की कल्याणकारी शिक्षाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। डॉ. सूर्य प्रसाद जी दीक्षित ने बताया कि गुरु जाम्भोजी ने संतमत और भक्तिमार्ग का अपनी अमरवाणी में समन्वय किया। उन्होंने मध्यमार्ग अपनाकर सत्य को प्रिय बनाया। उन्होंने पलायनवाद का बहिष्कार किया। लोक और परलोक और लोकमत और वेदमत का समन्वय किया। उन्होंने लोकहित लोक-कल्याण और लोकमंगल का पथ प्रशस्त कर सर्वभूते हितेरता: भावना का संदेश दिया। गुरु जाम्भोजी ने सर्वांगीण सांस्कृतिक जीवन के विकास श्रम और भक्ति दोनों को मानव समाज के मंगल के लिये आवश्यक बताया। वे मानववादी के साथ मानवतावादी भी थे। अंत में जाम्भाणी साहित्य के मूर्धन्य विद्वान् स्वामी कृष्णानन्द आचार्य अध्यक्ष जाम्भाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर ने सहज एवं शालीनतापूर्वक संगोष्ठी के समस्त विद्वानों और सभागार में उपस्थित श्रोतागणों के प्रति धन्यवाद प्रकट किया। इस सत्र का संयोजन डॉ. सुरेन्द्र बिश्नोई, हिसार ने किया व धन्यवाद ज्ञापन बिश्नोई युवा संगठन के अध्यक्ष श्री सत्येन्द्र साहू ने दिया। इस सत्र में वेदप्रकाश गोदारा द्वारा तैयार किए सबदवाणी के एड्रॉयड एप, गत संगोष्ठी की पुस्तक व युवा संगठन के कलेण्डर का विमोचन भी किया गया।

प्रथम सत्र अपराह्न 1.30 बजे प्रारम्भ हुआ। परिचर्या का विषय था, 'लोकमंगल के साधक गुरु जाम्भोजी'। यह सत्र भारत के अनेक

उद्घाटन सत्र में मंचासीन अतिथिगण व विद्वतगण।

विश्वविद्यालयों के प्रोफेसरों और अध्यक्षों की विशेष गोष्ठी थी, जिसमें विद्वानों ने गुरु जाम्भोजी की वाणी में प्रतिबिम्बित लोकमंगल के अनेक उपविषयों पर अनेक दृष्टिकोणों से अपने विचारों को स्पष्ट किया।

इस परिचर्चा के मुख्य अतिथि डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित, लखनऊ थे। इस परिचर्चा की अध्यक्षता प्रोफेसर देवसिंह पोखरिया, अध्यक्ष एवं प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, गढ़वाल (उत्तराखण्ड) ने की। डॉ. करुणाशंकर, मुम्बई ने विषय की प्रस्तावना प्रस्तुत की। उनके अनुसार हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण था। संतो और साहित्यकारों के जीवन का उद्देश्य केवल लोकमंगल होता है। गुरु जाम्भोजी बड़े दूरदर्शी थे। उनका नारी के प्रति दृष्टिकोण बड़ा उदार था। उनका महत्त्व इस कारण भी था कि वे प्रकृति के पर्यावरण संरक्षण के प्रबल पक्षधर थे। डॉ. बाबूराम ने तीन बिन्दुओं पर प्रकाश डाला। मेरी दृष्टि में लोकमंगल, गुरु जाम्भोजी की दृष्टि में लोकमंगल और गुरु जाम्भोजी का लोकमंगल से विश्वमंगल की ओर जाना। डॉ. रवीन्द्रनाथ मिश्र, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय, गोवा ने विश्व में अवतारों की परम्परा पर प्रकाश डालते हुए उनके लोकमंगलकारी स्वरूप को स्पष्ट किया। गुरु जाम्भोजी ने अवतार धारण करके कलियुग में करोड़ों जीवों का उद्धार किया। डॉ. देवेन्द्र कुमार गौतम, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर ने बिश्नोई पंथ को प्रहलाद पंथ बताया और पर्यावरण संरक्षण के लिये बिश्नोई समाज के बलिदान के ऐतिहासिक कार्य की सराहना की। डॉ. शैलेन्द्रकुमार शर्मा, प्रोफेसर, हिंदी विभाग, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में बताया कि गुरु जाम्भोजी का समस्त जीवन लोकमंगल के

संगोष्ठी में उपस्थित श्रोतागण।

लिये था और उनका चिंतन एकांगी न होकर वैश्विक था। वे विश्व के प्रथम पर्यावरणविद् थे। डॉ. आर. सेतुनाथ, सह प्रोफेसर एवं पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय, कालीकट ने बताया कि गुरु जाम्भोजी एक अवतारी पुरुष और दिव्य विभूति थे। आज समस्त विश्व पर्यावरण प्रदूषण से ग्रसित है। अत: आधुनिक काल में उनकी वाणी अत्यन्त सार्थक है। डॉ. अशोक कुमार सभ्रवाल, अध्यक्ष हिन्दी विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ ने कहा भारतीय चिंतन में प्रकृति का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस सत्र के संयोजक डॉ. दत्तात्रेय ममूलकर थे। इस सत्र में डॉ. ब्रह्मानन्द के नाटक 'अज्ञातवास' और डॉ. शैलेन्द्र शर्मा द्वारा संपादित पत्रिका 'अक्षरवार्ता' का विमोचन भी किया।

द्वितीय सत्र का शुभारम्भ सायंकाल 3.30 बजे हुआ। डॉ. देवेन्द्र कुमार गौतम, जोधपुर ने मुख्य अतिथि का आसन ग्रहण किया। डॉ. रवीन्द्र कुमार मिश्र, गोवा ने द्वितीय सत्र के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया। पत्रवाचकों में डॉ. माधुरी छेड़े, मुम्बई; डॉ. प्रज्ञा शुक्ला, मुम्बई; डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई, बीकानेर; डॉ. इन्द्रा बिश्नोई, बीकानेर; डॉ. मोहसिन खान, अलीबाग; हर्षवर्धन, जोधपुर आदि थे।

डॉ. माधुरी छेड़े ने बताया कि सबदवाणी में मैनेजमेंट का विधान है। गुरु जी ने वाद-विवाद को व्यर्थ बताया है। प्रज्ञा शुक्ला ने गुरु जाम्भोजी को विष्णु अवतार बताया। श्री कृष्णानुसार जीवन युक्ति से बीताकर अंत में मोक्ष पद की प्राप्ति करनी चाहिए। यह जीवन गोवलवास और क्षणभंगुर है। डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई ने सर्वधर्म समन्वय के महत्त्व को प्रतिपादित किया। मूल को सींचना चाहिए। डॉ. इन्द्रा बिश्नोई, बीकानेर ने ओजोन लेअर को प्रोजेक्ट के द्वारा प्रदर्शित किया। डॉ. मोहसिन खान ने अपने पत्र में बताया कि गुरु जाम्भोजी मुझे संत के वेश में दरवेश नजर आते हैं। हर्षवर्धन ने अंग्रेजी में व्याख्यान दिया। उनके अनुसार सबदवाणी का अंग्रेजी में भी अनुवाद होना चाहिए। अंशु शुक्ला ने स्त्री विमर्श की चर्चा की और गुरु जाम्भोजी का नारी जाति के प्रति उदार दृष्टिकोण था। डॉ. देवेन्द्र कुमार गौतम ने भगवान् शंकर को अर्द्धनारीश्वर बताया। इसलिए भी नारी पुरुष की अर्द्धांगिनी है। वह गृहस्थाश्रम का मूलाधार है। डॉ. रवीन्द्रनाथ मिश्र ने सभी पत्र वाचकों के पत्रों का सार संक्षेप में व्यक्त किया। इस सत्र की संयोजिका डॉ. विनीता सहाय थीं।

तीसरे सत्र का प्रारम्भ सायंकाल 5.30 हुआ। इस सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. भंवर सिंह सामौर, पूर्व प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, चुरु थे। डॉ. आर. सेतुनाथ, सह प्रोफेसर एवं पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय, कालीकट ने अध्यक्ष का आसन ग्रहण किया। पत्र वाचक थे- रामनारायण गोदारा, खारा; रेखा रानी, हरदा; महेश ढाका, जोधपुर; उदाराय खिलेरी, मेघावा; सुरेन्द्र सुन्दरम्, गंगानगर; बुधाराम ज्याणी, फलौदी; राम कुमार डेलू, अबोहर; बंशीलाल ढाका, बाड़मेर; सुग्रीव कड़वासरा, फतेहाबाद; जयकिशन खिलेरी, सांचौर। ये समस्त पत्र सारगर्भित थे।

डॉ. भंवर सिंह सामौर ने अपने वक्तव्य में पर्यावरण की बिगड़ती हालत में सुधार की ओर श्रोताओं का ध्यान आकर्षित किया। डॉ. आर. सेतुनाथ ने सब पत्रों की प्रशंसा की और सबदवाणी जम्भसागर के 120 पदों का भारत की अन्य भाषाओं में अनुवाद करने का परामर्श दिया। श्री संदीप धारणीया, एडवोकेट गंगानगर ने संयोजक का कार्य बड़ी कुशलतापूर्वक किया।

चतुर्थ सत्र दूसरे दिन 7 फरवरी को प्रात: 9.30 बजे शुरू हुआ। डॉ. अशोक कुमार सभ्रवाल, चण्डीगढ़ ने मुख्य अतिथि का आसन ग्रहण किया। डॉ. विष्णुदास वैष्णव, प्राचार्य, अंबा आर्ट कॉलेज, अंबाजी, गुजरात ने अध्यक्ष पद सुशोभित किया। डॉ. बनवारी लाल सहू, हनुमानगढ़; डॉ. ईश्वर पंवार, पूना; आर.के. बिश्नोई, दिल्ली; मांगीलाल बूड़िया, जोधपुर; पृथ्वी सिंह बैनीवाल, पंचकूला; प्रदीप बिश्नोई, मुरादाबाद; मोतीराम कालीराणा, फलौदी व महेश धायल, दिल्ली पत्रवाचक थे। डॉ. अशोक कुमार सभ्रवाल ने बिश्नोई पंथ को मंगलकारी बताया और गुरु की महिमा के बारे में बताया। विष्णुदास वैष्णव ने सभी पत्रों की भूरिभूरि प्रशंसा की। इस सत्र के संयोजक डॉ. सुनील बल्वी थे।

पंचम सत्र का आयोजन प्रात: ग्यारह बजे प्रारम्भ हुआ। इस सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. अर्जुन चौहान, प्रोफेसर, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर थे। डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, उज्जैन अध्यक्ष थे। डॉ. हुसैन खान शैख, सांचौर; डॉ. भल्लूराम खिचड़, जोधपुर; डॉ. घनश्याम वैष्णव, सांचौर; जगदीश बिश्नोई, फरीदाबाद; संयोजिका अंशु शुक्ला पत्रवाचक थे।

डॉ. हुसैन खान शैख ने गुरु जाम्भोजी की कृपा से अपने को पूर्णतया शाकहारी बताया। डॉ. भल्लूराम खिचड़ ने कर्त्तव्य परायणता पर बल प्रदान किया। डॉ. घनश्याम वैष्णव ने अपने पत्र में धर्म-दर्शन के महत्त्व एवं कर्त्तव्यनिष्ठा को कल्याणकारी माना। जगदीश बिश्नोई ने स्त्री उत्थान पर बल दिया और जम्भवाणी में नारी सशक्तिकरण का उल्लेख बताया। मुख्य अतिथि डॉ. अर्जुन चौहान ने दहेजप्रथा, नशाखोरी और भ्रूणहत्या को समाज के लिये घातक बताया। हिन्दी और मराठी का साहित्य और जाम्भाणी साहित्य महाराष्ट्र की परम्परा को दूसरा संस्करण माना जा सकता है। भारत का संत साहित्य लोकमंगल कारक है। भयंकर विवाद को संवाद में बदलना चाहिए। भक्ति की परम्परा प्राणवान साहित्य है। सबदवाणी पाठ्यक्रम में सम्मिलित होनी चाहिए। डॉ. शैलेन्द्र कुमार ने अपने अध्यक्षीय भाषण में भक्तिकाल के साहित्य को क्रान्तिकारी बताया। इस सत्र की संयोजिका अंशु शुक्ला थी।

षष्ठ सत्र अपराह्न 1.30 बजे शुरू हुआ। इस सत्र के मुख्य अतिथि का आसन डॉ. देवसिंह पोखरिया, गढ़वाल ने ग्रहण किया। इस सत्र के अध्यक्ष पद को डॉ. श्रीराम परिहार प्राचार्य शासकीय महाविद्यालय, खण्डवा ने गरिमा प्रदान की। डॉ. श्यामसुंदर पांडे, मुम्बई; डॉ.बालकवि सुरंज्य, मुम्बई; डॉ. चन्द्रपाल सिंह तंवर, बीकानेर; अनिल कुमार, चण्डीगढ़; विजयपाल सिंह बघेल, गाजियाबाद पत्रवाचक थे।

डॉ. बालकवि सुरंज्य ने यान्त्रिकता को समाज के लिये घातक बताया। विजयपाल सिंह बघेल ने बताया जहां धर्म और सत्य है, वहां भगवान् है। चन्द्रपाल सिंह ने पुरातत्त्व की महत्ता पर प्रकाश डाला। सुप्रसिद्ध विद्वान् श्रीराम परिवार ने अपना ओजस्वी और प्रभावशाली अध्यक्षीय भाषण दिया। उन्होंने जाम्भाणी साहित्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की और गुरु जाम्भोजी के लोक मंगलकारी गुणों का विस्तार से बखान किया। इस सत्र के संयोजक मोहन बिश्नोई थे।

समापन-सत्र अपराह्न 3.00 बजे शुरू हुआ। समापन सत्र के अवसर पर मुम्बई विश्वविद्यालय सभागार भारी भीड़ के कारण खचाखच भरा था। कई दर्शक और श्रोतागण सीट न मिलने के कारण खड़े थे। इस सत्र के मुख्य अतिथि श्री जसवंत सिंह बिश्नोई, चेयरमैन केन्द्रीय ऊन विकास बोर्ड, भारत सरकार थे, अध्यक्ष श्री सुखराम बिश्नोई विधायक सांचौर, विशिष्ट अतिथि, श्री अखिलेन्द्र मिश्र अभिनेता, मुम्बई थे। समापन भाषण डॉ. नन्दकिशोर नौटियाल, पूर्व

समापन सत्र में उपस्थित अतिथिगण।

अध्यक्ष, महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी ने दिया। सारस्वत वक्ता का दायित्व इन्हीं पंक्तियों के लेखक ने निभाया। संयोजक डॉ. सुरेन्द्र कुमार, बीकानेर थे। श्रीमती डॉ. सरस्वती बिश्नोई ने बताया कि गुरु जाम्भोजी ने अहिंसा पर बल दिया। नाथ पंथियों प्रचलित पाखण्डों का खंडन किया और सर्वधर्म समभाव पर बल दिया। श्री जसवंत सिंह बिश्नोई ने जाम्भाणी पंथ की जीव रक्षा भावना के बारे में ओजस्वी व्याख्यान दिया। विशिष्ट अतिथि अखिलेन्द्र मिश्र ने भी गुरु महिमा पर प्रभावशाली व्याख्यान दिया। श्री सुखराम बिश्नोई ने इस सम्मेलन की बड़ी प्रशंसा की और जाम्भाणी साहित्य के महत्त्व पर प्रकाश डाला। डॉ. नन्दकिशोर नौटियाल ने महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी और जाम्भाणी साहित्य अकादमी को एक सूत्र में बांधने का परामर्श दिया। संगोष्ठी में अथक सेवा देने के लिए समापन सत्र में श्री सत्येन्द्र साहू, सी.ए.; पीराराम खावा, कांदीवेली; हरीश भांभू, सेन्ट्रल; हरीश गोदारा, विलेपार्ले; सुरेश डूडी, विलेपार्ले; सुनील गोदारा, अंधेरी; ओमप्रकाश ढाका, सेंट्रल; पप्पजी ढाका, धारावाही; प्रकाश पूनिया, धारावाही; बुधराम सहारण, सेंट्रल को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। संगोष्ठी सफलता के लिए सभी ने बड़ी प्रसन्नता प्रकट की और जम्भेश्वर भगवान् का जय जयकारे के साथ भारत के इस महानगर मुम्बई की यह संगोष्ठी सम्पन्न हुई।

संगोष्ठी के समापन के तुरन्त बाद एक भव्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें खड़ी बोली, उर्दू और राजस्थानी-हिन्दी के कवियों और शायरों ने और कवयित्रियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लेकर इस आयोजन को चार चांद लगा दिये। अध्यक्षा सुप्रसिद्ध गीतकार श्रीमती माया गोविन्द मुंबई थी। कविगण हस्तीमल हस्ती, पंडित किरण मिश्र, डॉ. भंवर सिंह सामौर, डॉ. कृष्णलाल बिश्नोई, श्री योगेन्द्र पाल बिश्नोई, श्रीमती चित्रा देसाई, राम गोविन्द जी, जयकिशन खिलेरी, देवसिंह पोखरिया, बंशीलाल ढाका आदि थे। कवियों, गजलकारों और दोहाकारों ने श्रोताओं को अपनी मधुर और ओज गुणपूर्ण कविताओं द्वारा मन्त्र-मुग्ध कर लिया। इसके

कवि सम्मेलन में उपस्थित कविगण।

संयोजक श्रीगंगानकर के यशस्वी कवि श्री सुरेन्द्र सुंदरम जी थे। अंत में यह भव्य-समारोह हर्षध्वनि और गुरु जम्भेश्वर भगवान् की जय-जयकार के साथ सम्पन्न हुआ।

इस संगोष्ठी के अवसर पर अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के सचिव श्री देवेन्द्र बूड़िया, जोधपुर; से.नि. आइ.ए.एस. श्री पी.आर. बिश्नोई; पूर्व ए.डी.सी. श्री अशोक बिश्नोई; महासभा के बीकानेर जिले के अध्यक्ष श्री देवेन्द्र भादू, आरपीएस; हिसार जिले के अध्यक्ष श्री सहदेव कालीराणा; मुरादाबाद के अध्यक्ष श्री प्रदीप बिश्नोई; हिसार सभा के सचिव श्री मनोहर गोदारा; उपाध्यक्ष श्री कृष्ण राहड़; जीव रक्षा हिसार के उपाध्यक्ष श्री कृष्ण राहड़; मुम्बई महासभा प्रतिनिधि श्री मांगीलाल सहारण, सी.ए.; पंजाब सभा के पूर्व प्रधान श्री सुरेन्द्र गोदारा; महासभा के पूर्व उपाध्यक्ष श्री भूरेलाल खोड़; मध्यप्रदेश सभा के पूर्व प्रधान श्री आर.डी. झूरिया; हरदा से श्री पूनमचंद पंवार; अकादमी सचिव श्री मूलाराम लोळ; रामड़ावास से श्री बलदेवाराम; श्री श्रीराम सहू, श्री फरसाराम सहू; गुरु जम्भेश्वर चेरिटेबल ट्रस्ट, सेंट्रल के अध्यक्ष श्री जालाराम लोहमरोड़; नायगांव ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री हीरालाल ईराम; पूना ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री मोहन डूडी; पूना से श्री सोहनलाल लोहमरोड़; गोवा से श्री गणपत बिश्नोई; हनुमानगढ़ से श्री मोहनलाल पूनिया; डबवाली से श्री इन्द्रजीत धारणिया; औसियां से श्री राकेश माचारा, कर्नल डी.के. बिश्नाई; अहमदाबाद से श्री किशनलाल कुराड़ा; सूरत से श्री भजनलाल लोळ; वापी से श्री गंगाराम गोदारा आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

आर्थिक सहयोग : संगोष्ठी को सफल बनाने में निम्नलिखित महानुभावों ने अपना आर्थिक योगदान दिया- हिसार के प्रतिभागी (1,08,000), जाम्भाणी साहित्य अकादमी (1,00,000), गुरु जम्भेश्वर ट्रस्ट, पूना (75,000), श्री कालूराम मांझू, बोरीवेली (61,000), गुरु जम्भेश्वर ट्रस्ट, नायगांव (51,000), बिश्नोई समाज, विलेपार्ले (49,900), बिश्नोई समाज, मालाड (41,000), सी.ए. श्री सत्येन्द्र साहू (30,000), बिश्नोई युवा संगठन, मुम्बई; श्री पप्पू ढाका ज्वैलर्स, श्री प्रकाश पूनिया ज्वैलर्स, श्री सुनील गोदारा, अंधेरी; श्री नरसिंह जांगू ज्वैलर्स, श्री आर.के. बिश्नोई, दिल्ली (प्रत्येक ने 25,000), श्री जयकिशन साहू (21,000), श्री रघुनाथ खिचड़, श्री बाबूजी सहारण, हैण्डवाड़ा; श्री नारायण ढाका (प्रत्येक ने 15,000), श्री बसंत साहू, जोधपुर; हनुमानगढ़ प्रतिभागी; जम्भेश्वर ट्रस्ट, नवी मुम्बई (प्रत्येक ने 11,000), श्री हरदान डारा, श्री हीरालाल ईराम, श्री केसाराम खावा, पूना (प्रत्येक ने 5,000), श्री जयकिशन सहारण (2,100) आदि।

संगोष्ठी में फाइल व स्मृति चिह्नों की व्यवस्था श्री सोहनलाल लोहमरोड़, निदेशक वी.सी.सी., पूना द्वारा; जलपान व्यवस्था श्री बुद्धराम खोखर द्वारा, विज्ञापन व्यवस्था श्री प्रकाश पूनिया, श्री पप्पू ढ़ाका, श्री सुनील गोदारा द्वारा की गई। इन पंक्तियों के लेखक को अब तक आयोजित सभी जाम्भाणी संगोष्ठियों में जाने का अवसर मिला है। इस अनुभव के आधार पर नि:संकोच कहा जा सकता है कि यह संगोष्ठी सर्वश्रेष्ठ थी। इससे न केवल गुरु जम्भेश्वर भगवान की शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार होगा बल्कि शोध को एक नई दिशा प्राप्त होगी। मेरा विश्वास है कि भविष्य में आयोजित होने वाली जाम्भाणी संगोष्ठियों को इस संगोष्ठी से एक नई दिशा और ऊर्जा मिलेगी।

-डॉ. ब्रह्मानन्द, पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, मो.: 94676-48471

कुलदीप बिश्नोई, विधायक द्वारा जाम्बा में हरियाणा भवन का शिलान्यास किया

हिसार: आदमपुर से विधायक, अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के सरंक्षक चौधरी कुलदीप बिश्नोई द्वारा राजस्थान के जिला जोधपुर की फलौदी तहसील में पावन तीर्थ जाम्भोलाव में हरियाणा भवन का शिलान्यास किया गया। श्री जाम्भोलाव धाम में श्री बिश्नोई सभा, हिसार के नेतृत्व में तीर्थ यात्रियों को सुविधा प्रदान करने हेतु हरियाणा भवन बनाने की योजना बनाई गई थी। इस शिलान्यास समारोह की अध्यक्षता चौ. हीराराम जी भंवाल, अध्यक्ष, अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा, मुकाम ने की जबकि उनके साथ फलौदी के विधायक मास्टर पब्बाराम, पूर्व संसदीय सचिव, हरियाणा सरकार चौधरी दुड़ाराम, प्रधान श्री बिश्नोई सभा, हिसार श्री सुभाष देहडू तथा प्रधान श्री बिश्नोई सभा, पंचकूला; श्री अचिन्तराम गोदारा समाज के अन्य अनेक वर्तमान एवं भूतपूर्व विधायक तथा पूर्व सांसद और गणमान्य बिश्नोईजनों ने अपनी गौरवमयी उपस्थिति दर्ज करवाई।

जोधपुर जिले की फलौदी तहसील के जाम्बा गांव में बनने वाले इस हरियाणा भवन के लिए भूमि कई वर्ष पहले ही श्री बिश्नोई सभा, हिसार द्वारा खरीद कर ली गई थी। इस भवन का निर्माण भी श्री बिश्नोई सभा, हिसार की अगुवाई में हरियाणा के समस्त बिश्नोई समाज द्वारा किया जाएगा। इसकी नींव 08 फरवरी, 2016 को अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के सरंक्षक चौधरी कुलदीप बिश्नोई द्वारा प्रात: ठीक 11 बजे रखी गयी। इस अवसर पर निर्माण सहयोगी श्री बिश्नोई सभा, पंचकूला; श्री बिश्नोई सभा, आदमपुर; श्री बिश्नोई सभा, फतेहाबाद; श्री बिश्नोई सभा, रतिया; श्री बिश्नोई सभा, टोहाना और श्री बिश्नोई सभा, हिसार के प्रधान एवं अन्य पदाधिकारीगण भी उपस्थित थे। इस पावन तीर्थ स्थल जाम्बा के प्रति हरियाणा के अभूतपूर्व मुख्यमंत्री और बिश्नोई रत्न चौधरी भजन लाल की अत्यन्त गहरी आस्था थी। गत दिवस उन्हीं के सुपुत्र एवं हजकां के आदमपुर से

हरियाणा भवन, जाम्बा का शिलान्यास करते चौ. कुलदीप बिश्नोई व श्री हीराराम भंवाल

शिलान्यास के दौरान विचार-विमर्श करते चौ. कुलदीप बिश्नोई, बिश्नोई सभा, हिसार के पदाधिकारीगण व अन्य।

विधायक चौधरी कुलदीप बिश्नोई द्वारा नींव पत्थर रखने का पवित्र कार्य सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर शिरोमणि बिश्नोई समाज के इस पावन तीर्थ स्थल की महिमा अपरम्पार है। श्री जम्भसरोवर की महिमा बहुत ही रोचक एवं कल्याणकारी है।

-पृथ्वीसिंह बैनीवाल बिश्नोई, पंचकूला

जाम्बा व मुकाम में खुलेगा रेस्क्यू सेंटर

जाम्बा व मुकाम में वन्य जीवों के उपचार व देखभाल के लिए जल्द ही रेस्क्यू सेंटर खुलेगा। वन एवं पर्यावरण मंत्री राजकुमार रिणवां ने संतों की उपस्थिति में इसकी सैद्धांतिक अनुमति दे दी है। इस दौरान मुख्य प्रधान वन संरक्षक एस.एस. चौधरी भी उपस्थित थे। वन एवं पर्यावरण मंत्री राजकुमार रिणवा अपने विधानसभा क्षेत्र दौरे पर थे। अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा द्वारा बार-बार मुकाम में वन्य जीवों के लिए रेस्क्यू सेंटर खुलवाने की मांग करते आ रहे हैं। इस पर मंत्री रिणवा ने बिश्नोई समाज के मुख्य धाम जांबा व मुकाम में रेस्क्यू सेंटर खोलने की सैद्धांतिक अनुमति देते हुए कहा कि इस पर कार्य भी जल्द पूर्ण हो जाएगा। इस कार्य के लिए समस्त बिश्नोई समाज ने मंत्री जी का आभार जताया।

-राजेश बिश्नोई, श्री गुरु जम्भेश्वर बणीधाम, मौलीसर बड़ा, चुरू (राज.)

बिश्नोई समाज के प्रमुख धाम

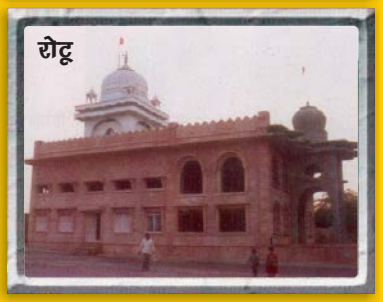

जाम्भाणी पर्व एवं अमावस्या

विक्रमी सम्वत् 2072 फाल्गुन की अमावस्या

लगेगी : 08.03.2016, मंगलवार, प्रात: 10.33 बजे

उतरेगी : 09.03.2016, बुधवार, प्रात: 7.24 बजे

विक्रमी सम्वत् 2073 चैत्र की अमावस्या

लगेगी : 06.04.2016, बुधवार, रात्रि 8.36 बजे

उतरेगी : 07.04.2016, गुरुवार, सायं 4.35 बजे

विक्रमी सम्वत् 2073 वैशाख की अमावस्या

लगेगी : 05.05.2016, गुरुवार, रात्रि 4.46 बजे

उतरेगी : 06.05.2016, शुक्रवार, रात्रि 12.59 बजे

फाल्गुन अमावस्या मेला : 08.03.2016 बुधवार, मुकाम संभराथल, पीपासर, कांठ, लोहावट, सोनड़ी, मेघावा, भीयांसर

होली का पाहल : 24.3.2016 गुरुवार

चैत्र अमावस्या मेला : 07.04.2016 गुरुवार, जांभोलाव, लोदीपुर, सोनड़ी, मालवाड़ा, सरनाऊ, गुड़ा मालाणी

वील्होजी स्मृति मेला : 17.04.2016 रविवार, रामड़ावास (जोधपुर)

पुजारी : **बनवारी लाल सोढ़ा,** (जैसलां वाले) मो.: 09416407290

उनतीस धर्म नियम

- तीस दिन सूतक रखना।
- पांच दिन ऋतुवन्ती स्त्री का गृहकार्य से पृथक् रहना।
- प्रतिदिन सवेरे स्नान करना।
- शील का पालन करना व संतोष रखना।
- बाह्य और आन्तरिक पवित्रता रखना।
- द्विकाल संध्या-उपासना करना।
- संध्या समय आरती और हरिगुण गाना।
- निष्ठा और प्रेमपूर्वक हवन करना।
- पानी, ईंधन और दूध को छान कर प्रयोग में लेना।
- वाणी विचार कर बोलना।
- क्षमा-दया धारण करना।
- चोरी नहीं करनी।
- निन्दा नहीं करनी।
- झूठ नहीं बोलना।
- वाद-विवाद का त्याग करना।
- अमावस्या का व्रत रखना।
- विष्णु का भजन करना।
- जीव दया पालणी।
- हरा वृक्ष नहीं काटना।
- काम, क्रोध आदि अजरों को वश में करना।
- रसोई अपने हाथ से बनानी।
- थाट अमर रखना।
- बैल बधिया नहीं कराना।
- अमल नहीं खाना।
- तम्बाकू का सेवन नहीं करना।
- भांग नहीं पीना।
- मद्यपान नहीं करना।
- मांस नहीं खाना।
- नीला वस्त्र व नील का त्याग करना।

RNI No. : 12406/57
POSTAL REGD. NO. : L/Regd. NP/HSR/01/2014-2016
L/WPP/HSR/03/14-16

POSTAGE PREPAID IN CASH
POSTED AT : HISAR H.O.
POSTING DATE : 1st OF EVERY MONTH

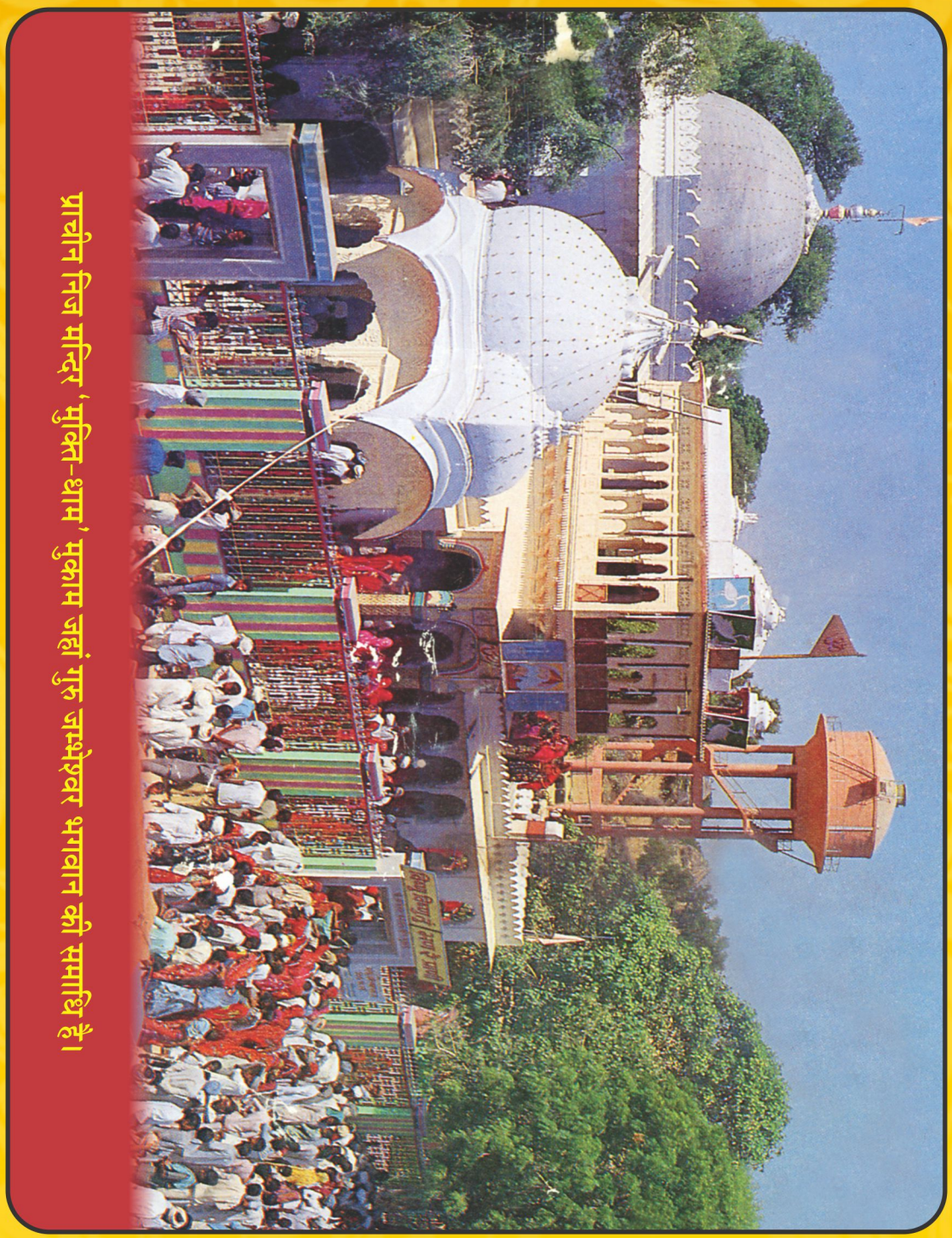

DOREX Printers 9896011117

मुद्रक, प्रकाशक श्री सुभाष देहडू, प्रधान बिश्नोई सभा, हिसार ने डोरेक्स ऑफसेट प्रिंटर्स, हिसार से बिश्नोई सभा, हिसार के लिए मुद्रित करवाकर 'अमर ज्योति' कार्यालय, श्री बिश्नोई मन्दिर, हिसार से दिनांक 1 मार्च, 2016 को मुख्य डाकघर, हिसार से प्रेषित किया।